04 - अस्थिरता में उलझा दक्षिण एशिया

05 - 'द थर्सडे मर्डर क्लब'- बूढ़े जासूसों की ऊर्जा

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 16 सितंबर, 2025

06 - जिला खाद्य आपूर्ति विभाग ने जारी किए नोटिस संतोषजनक जवाब नहीं...

07 - जिला न्यायालय सहित 24 खंडपीठों पर वर्ष की सबसे सफल...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 19, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

बस्तर में नक्सलवाद अब आखिरी सांसें गिन रहा है

आलोक पुतुल

दो दिनों के भीतर सीपीआई माओवादी की सेंट्रल कमेटी के एक सदस्य मोडेम बालकृष्णा के मारे जाने और सेंट्रल कमेटी की ही दूसरी सदस्य सुजाता के आत्मसमर्पण के बाद माना जा रहा है कि माओवादी संगठन अपने सबसे मुश्किल दौर से गुज़र रहा है। सरकारी दस्तावेज़ों पर भरोसा करें तो कभी 42 सदस्यों वाली सीपीआई माओवादी की सेंट्रल कमेटी में, अब केवल 13 सदस्य बचे हैं।

छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री विजय शर्मा ने कहा, 'सेंट्रल कमेटी की सदस्य सुजाता के आत्मसमर्पण के बाद, छत्तीसगढ़ में सक्रिय माओवादियों की सेंट्रल कमेटी में अब कुछ ही सदस्य बचे हैं। कुल मिला कर इनका शीर्ष नेतृत्व समापन की ओर है।' केंद्र सरकार ने 31 मार्च 2026 तक देश से माओवादियों को पूरी तरह से खत्म करने की समय सीमा तय कर रखी है। यही कारण है कि पिछले 20 महीनों से छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों ने माओवादियों के खिलाफ़ सघन अभियान चलाया हुआ है।

छत्तीसगढ़ अलग राज्य बनने के बाद से पिछले 25 सालों में माओवादियों के खिलाफ़ सुरक्षाबलों का यह सबसे बड़ा अभियान है। इसमें बड़ी संख्या में माओवादी मारे गए हैं, गिरफ़्तार किए गए हैं या उन्होंने आत्मसमर्पण किया है। लेकिन गुरुवार-शुक्रवार को एक मुठभेड़ में सेंट्रल कमेटी के सदस्य मोडेम बालकृष्णा के मारे जाने की ख़बर की चर्चा हो ही रही थी, कि शनिवार को सेंट्रल कमेटी की एक और सदस्य सुजाता के तेलंगाना में आत्मसमर्पण की ख़बर सामने आ गई।

2004 में जब पीपल्स वॉर ग्रुप और एमसीसी का विलय हुआ और सीपीआई माओवादी का गठन हुआ, तब इस संगठन की सेंट्रल कमेटी में 42 सदस्य थे। लेकिन सरकारी दस्तावेज़ों की मानें तो आज की तारीख में इस कमेटी में केवल 13 माओवादी बचे हैं। अकेले इस साल अब तक सेंट्रल कमेटी के 6 सदस्य मारे जा चुके हैं। इसी साल जनवरी में रामचंद्र रेड्डी उर्फ चलपति, मई में पुल्लुरी प्रसाद राव ऊर्फ चंद्रन्ना, मई में ही पार्टी के महासचिव नंबाला केशव राव, जून में सुधाकर और गजराला रवि ऊर्फ उदय मारे गए। मोडेम बालकृष्णा की मौत के साथ इस साल मारे जाने वाले लोगों की संख्या बढ़ कर छह हो गई। सेंट्रल कमेटी में अब 13 लोग बचे हैं।

इनमें से 8 आंध्र प्रदेश-तेलंगाना से हैं, जिनमें मुपल्ला लक्ष्मण राव ऊर्फ गणपति, मल्लोजुल्ला वेणुगोपाल ऊर्फ सोनू, तिप्पिरी तिरूपति ऊर्फ देवजी, पसुनुरी नरहरि ऊर्फ विश्वनाथ, कादरी सत्यनारायण रेड्डी ऊर्फ कोसा, मल्ला राजिरेड्डी ऊर्फ संग्राम, पाका हनुमंथु ऊर्फ गणेश और कट्टा रामचंद्र ऊर्फ राजूदादा शामिल हैं। इस कमेटी में झारखंड से तीन सदस्य मिसिर बेसरा ऊर्फ सुनील, अनल दा उर्फ पथिराम मांझी और सहदेव ऊर्फ अनुज शामिल हैं। सीपीआई माओवादी की सेंट्रल कमेटी में छत्तीसगढ़ के दो माओवादियों मज्जीदेव ऊर्फ रामधीर और माड़वी हिड़मा को रखा गया है।

पुलिस के एक अधिकारी ने कहा, 'बस्तर में माओवादी संगठन अपने अंतिम दौर में है। सुजाता का आत्मसमर्पण इसका उदाहरण है। झारखंड, तेलंगाना और आंध्र में संगठन नाम भर के लिए बचा है और मोडेम बालकृष्णा के मारे जाने के बाद अब ओडिशा में भी यही स्थिति है।'

छत्तीसगढ़ के गरियाबंद में सीपीआई माओवादी की सेंट्रल कमेटी के सदस्य मोडेम बालकृष्णा के मारे जाने को पुलिस अपनी बड़ी उपलब्धि मान कर चल रही है। माना जा रहा है कि ओडिशा में माओवादियों की कंधमाल-कालाहांडी-बौद्ध-नवागढ़ कमेटी का पूरी तरह से सफाया हो चुका है।

वारंगल ज़िले के मडीकोंडा के रहने वाले लगभग 60 साल के मोडेम बालकृष्णा को बालन्ना, मनोज, भास्कर और रामचंद्र समेत कई नामों से जाना जाता था। 1983 में माओवादी संगठन में शामिल होने वाले बालकृष्णा को, 1987 में महबूबनगर में गिरफ़्तार किया गया था।

1990 में पीपल्स वॉर ग्रुप ने तेलुगुदेशम पार्टी के विधायक मंडावा वेंकटेश्वर राव का जब अपहरण किया तो उन्होंने राव की रिहाई के बदले अपने कई साथियों को जेलों से रिहा करने की शर्त रखी। विधायक मंडावा वेंकटेश्वर राव के बदले जिन नक्सलियों को रिहा किया गया, उसमें बालकृष्णा भी शामिल थे।

माओवादी संगठन में मोडेम बालकृष्णा की पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से सक्रियता थी। माओवादी संगठन की सेंट्रल रीजनल ब्यूरो का अहम सदस्य होने के अलावा ओडिशा राज्य समिति के साथ-साथ केकेबीएन डिवीजन यानी कंधमाल, कालाहांडी, बौद्ध, नयागढ़ डिवीजन का प्रभार भी बालकृष्णा के पास ही था।

बालकृष्णा की अगुवाई में केकेबीएन डिवीजन ओडिशा-छत्तीसगढ़ सीमा पर लंबे समय तक सक्रिय रही। पिछले कुछ वर्षों में बालकृष्णा की सेहत को लेकर खबरें आईं कि वह गंभीर रूप से अस्वस्थ हैं, लेकिन बालकृष्णा सुरक्षाबलों के निशाने पर बने रहे।

इस साल जनवरी में सुरक्षा बलों ने मोडेम बालकृष्णा की तलाश को प्राथमिकता बनाते हुए कई बड़े अभियान चलाए। लेकिन अब पुलिस को सफलता मिली है। सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि बालकृष्ण का मारा जाना माओवादी संगठन के लिए बड़ा झटका है। केकेबीएन डिवीजन, जिसे लंबे समय तक ओडिशा-छत्तीसगढ़ सीमा पर माओवादी गतिविधियों का मज़बूत गढ़ माना जाता था, अब बिना नेतृत्व के बिखर सकता है।

अब सुजाता को लेकर भी कहा जा रहा है कि उनकी रिहाई के बाद संगठन में महिला कैडरों में बिखराव आ सकता है। पोथुला पद्मावती ऊर्फ सुजाता ने शनिवार को तेलंगाना पुलिस मुख्यालय में आत्मसमर्पण किया। करीब 43 साल तक अंडरग्राउंड रहने वालीं और चार दशकों तक सत्ता को बंदूक से चुनौती देने वाली 62 वर्षीय पोथुला पद्मावती ऊर्फ सुजाता सीपीआई माओवादी की सेंट्रल कमेटी की सदस्य भी थीं और माओवादियों की जनताना सरकार की प्रमुख भी।

आंध्र प्रदेश के जोगुलंबा गडवाल ज़िले के पेंचिकलपाडु गाँव में जन्मीं सुजाता एक किसान और पोस्टमास्टर पिता तथा गृहिणी माँ की बेटी थीं। बचपन सामान्य था, लेकिन कॉलेज के दिनों में वामपंथी विचारधारा से प्रभावित होकर 1982 में उन्होंने अंडरग्राउंड रहकर राजनीति करने की राह चुन ली। 1988-89 में वह एतापल्ली दलम की डिप्टी कमांडर बनीं, 1996 में देवुरी दलम की कमांडर, 1997 से 1999 तक दक्षिण बस्तर की जिम्मेदारी संभाली। वह 2001 में दंडकारण्य विशेष ज़ोनल समिति में पहुँचीं और 2007 में जनताना सरकार की प्रमुख बनीं, जिसे माओवादियों की समानांतर सरकार कहा जाता है।

1984 में उनकी मुलाकात माओवादी आंदोलन के शीर्ष नेता मल्लोजुला कोटेश्वर राव ऊर्फ किशनजी से हुई। दोनों ने विवाह किया और साथ मिलकर आंदोलन को नई दिशा दी। लेकिन 2011 में पश्चिम बंगाल के जंगलमहल में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में किशनजी मारे गए। पति की मौत, भूमिगत जीवन और बेटी की चिंता ने सुजाता को कमज़ोर किया। बीमारियाँ और बढ़ती उम्र भी साथ छोड़ने लगीं। शनिवार को आत्मसमर्पण के साथ, उन्होंने माओवाद को हमेशा-हमेशा के लिए विदा कह दिया।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पीएम बोले- राजद-कांग्रेस बिहार की तुलना बीड़ी से करते हैं

पहले लालटेन जलाकर पंजा जनता के पैसों पर हाथ मारता था

पटना। पीएम नरेंद्र मोदी सोमवार को बिहार पहुंचे। पूर्णिया में सभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने राहुल गांधी पर निशाना साधा। बिना नाम लिए उन्होंने कहा, 'जो मेरे पहले यहां के चक्कर काटकर गए, उन्हें मखाना का नाम भी नहीं पता होगा।' उन्होंने कहा, 'बिहार की प्रगति और गति कुछ लोगों को रास नहीं आ रही है। कांग्रेस और राजद वालों को ये पच नहीं रहा है। बिहार जब भी आगे बढ़ता है, ये लोग बिहार

का अपमान करने में जुट जाते हैं। ये लोग बिहार की तुलना बीड़ी से कर रहे हैं। इन लोगों को बिहार से नफरत है। इन लोगों ने बिहार को बदनाम करने की ठान ली है। ये सिर्फ अपनी तिजोरी भरने वाले लोग हैं। इससे पहले उन्होंने पूर्णिया एयरपोर्ट का उद्घाटन किया। इसके बाद वे खुली गाड़ी से लोगों का अभिवादन करते हुए मंच पर पहुंचे। गाड़ी में उनके साथ ष्टरू नीतीश कुमार और डिप्टी ष्टरूसम्राट चौधरी भी मौजूद थे।

मोदी बोले- कांग्रेस-राजद से बिहार को खतरा

कांग्रेस और राजद से न सिर्फ बिहार के सम्मान को खतरा है। बिहार की पहचान को भी खतरा है। वोट बैंक का स्वार्थ है कि कांग्रेस और राजद के लोग घुसपैठियों को बचाने में लगे हैं। नारे लगा रहे हैं। यात्राएं निकाल रहे हैं। ये बिहार के संसाधन और सुरक्षा दोनों को दांव पर लगाना चाहते हैं।

राजद-कांग्रेस की जमात कान खोलकर सुन लो। जो भी घुसपैठिया है उसे बाहर जाना ही होगा। घुसपैठ पर ताला लगाना NDA की पक्की जिम्मेदारी है। जो नेता घुसपैठियों को बचाने के लिए खड़े हैं, वो सामने आ जाएं। चुनौती देता हूं आप उनकी ढाल बनिए मैं उन्हें बाहर निकालकर रहूंगा। भारत में भारत का कानून चलेगा।

पीएम मोदी कोलकाता पहुंचे

सेना की कॉन्फ्रेंस का किया उद्घाटन

कोलकाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को कोलकाता में 16वीं कंबाइंड कमांडर्स कॉन्फ्रेंस (CCC) का उद्घाटन किया। कॉन्फ्रेंस सेना की पूर्वी कमान के हेडक्वार्टर फोर्ट विलियम कोलकाता में 15 से 17 सितंबर तक होगा। इस साल की थीम- 'ईयर ऑफ रिफॉर्म्स - भविष्य के लिए ट्रांसफॉर्मेशन' है। इस साल कॉन्फ्रेंस का 16वां संस्करण है। यह सेना का सबसे बड़ा विचार-विमर्श का मंच है। इसमें सेना के अधिकारी और सरकार के मंत्री देश की सुरक्षा और रणनीति पर चर्चा करते हैं। तीनों सेनाओं के प्रमुख इसमें शामिल हुए। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, NSA अजित डोभाल, CDS जनरल अनिल चौहान और मंत्रालयों के सीनियर अधिकारी कॉन्फ्रेंस में शामिल होंगे। पीएम मोदी रविवार शाम कोलकाता पहुंचे थे। पिछले एक महीने में यह उनका दूसरा बंगाल दौरा है। संयुक्त कमांडर्स कॉन्फ्रेंस (CCC) भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना का सबसे बड़ा रणनीतिक मंच है। इसमें देश की तीनों सेनाओं के शीर्ष अधिकारी और केंद्र सरकार के बड़े मंत्री मिलकर राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा नीतियों और भविष्य की रणनीतियों पर चर्चा करते हैं।

अंबानी के वनतारा को क्लीनचिट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा, 'जामनगर स्थित वनतारा वाइल्डलाइफ रेस्क्यू एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर में जानवरों की खरीद-बिक्री नियमों के दायरे में हुई है।' इस सेंटर को अंबानी परिवार का रिलायंस फाउंडेशन चलाता है। कोर्ट ने कहा कि विशेष जांच दल (SIT) की रिपोर्ट में कोई गड़बड़ी नहीं मिली है। जस्टिस पंकज मित्तल और जस्टिस पीबी वराले की बेंच ने कहा, अब इस मामले को बार-बार उठाने की इजाजत नहीं दी जाएगी। स्वतंत्र समिति ने जांच की है और हम उसी पर भरोसा करेंगे। इससे पहले SC ने 26 अगस्त को 2 पब्लिक इंटरेस्ट पिटीशन (PIL) पर SIT बनाने का आदेश दिया था। एक वकील सीआर जया सुकीन और दूसरी याचिका देव शर्मा ने जुलाई में कोल्हापुर के जैन मठ से हाथी 'माधुरी' को वनतारा में ले जाने के विवाद के बाद दायर की थी।

SIT रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की जाएगी- वनतारा के वकील हरीश साल्वे ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि जांच रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की जानी चाहिए। उनका तर्क था कि अगर रिपोर्ट बाहर आई तो न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे अखबार उसका केवल कुछ हिस्सा छापकर गलत नैरेटिव बना देंगे।

मप्र में बनेगा इंजीनियर ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट : मुख्यमंत्री

सीएम ने कहा- ऐसा इंस्टीट्यूट बनेगा जिसमें दूसरे प्रदेशों से भी ट्रेनिंग लेने आएंगे इंजीनियर

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में इंजीनियरिंग ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट बनेगा। जिसमें ट्रेनिंग देकर इंजीनियरों को दक्ष बनाया जाएगा। यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कही। वे इंजीनियर-डे पर सोमवार को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि अभियंता का मतलब आरंभ और शुभारंभ कर्ता है।

सीएम ने कहा कि वैज्ञानिक शोध करते हैं, लेकिन जनता की सुगमता के लिए बीच की कड़ी अभियंता होते हैं। कोरोना के दौर में हमने नमस्कार को चमत्कार देखा। अच्छे-अच्छे राष्ट्राध्यक्ष हाथ जोड़े खड़े थे। पार्लियामेंट की दोनों डिजाइन देखो तो पुरानी वाली मितावली पढ़ावली की है। नए भवन की डिजाइन हमारे बीजा मंडल की है। सृजन वालों से आज के समय में अभियंता ही जुड़ता है। अभी मप्र के इंजीनियर ट्रेनिंग एंड रिसर्च के लिए प्रदेश से बाहर जाते हैं। ऐसा इंस्टीट्यूट बनेगा कि दूसरे प्रदेशों से भी यहां ट्रेनिंग लेने इंजीनियर आ सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'लोक निर्माण से लोक कल्याण' के संकल्प के साथ राज्य स्तरीय अभियंता दिवस कार्यक्रम का कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राज्य स्तरीय अभियंता दिवस कार्यक्रम में उत्कृष्ट और गुणवत्तापूर्ण कार्यों के लिए लोक निर्माण विभाग के अभियंताओं और संविदाकारों को सम्मानित किया।

कई सरकार हमारे कामों को अपना रहीं- सीएम ने कहा कि देश में कई सरकारें हमारे कामों को अपना रही हैं। समय पर निर्माण करने वालों को सम्मानित करना चाहिए। वो जमाना गया जब ताजमहल बनने के बाद हाथ काट दिए जाते थे।

अच्छे काम के लिए पुरस्कार भी मिलना चाहिए: लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह

लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह ने कहा कि हम ईको फ्रेंडली इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार कर रहे हैं। काम में गड़बड़ी न हो, इसलिए औचक निरीक्षण कर ठेकेदारों पर कड़ाई की जा रही है। दंड लगा रहे हैं। दंड सुधार के लिए होता है, अच्छे काम के लिए पुरस्कार भी मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज हम 7 इंजीनियर और 4 कॉन्ट्रैक्टर को पुरस्कार दे रहे हैं। अच्छा अभियंता केवल तकनीकी ज्ञान से नहीं बल्कि अच्छे वर्क से बनता है। हम इंजीनियर को नई तकनीक से काम करने की बात करते हैं तो हमें उनके साथ खड़े होकर उन्हें तकनीकी रूप से दक्ष करना पड़ेगा। ट्रेनिंग के लिए राज्य के बाहर न जाना पड़े बल्कि देश के इंजीनियर यहां ट्रेनिंग लेने आएं।

कार्यक्रम में सीएम डॉ. मोहन यादव, पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह, पीएस सुखवीर सिंह, एमपीआरडीसी के एमडी भारत यादव, बिल्डिंग डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन के एमडी सीबी चक्रवर्ती और विभागीय अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे।

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

अब इसे छोड़ के जाना भी
नहीं चाहते हम
और घर इतना पुराना भी
नहीं चाहते हम

सर भी महफ़ूज़ इसी में है
हमारा लेकिन
क्या करें सर को झुकाना
भी नहीं चाहते हम

हाथ और पांव किसी के
हों किसी का सर हो
इस तरह क़द को बढ़ाना
भी नहीं चाहते हम

अपनी ग़ैरत के लिए
फ़ाक़ा कशी भी मंजूर
तेरी शर्तों पे ख़ज़ाना
भी नहीं चाहते हम

आंख जब दी है नज़ारे
भी आता कर यारब
एक कमरे में ज़माना
भी नहीं चाहते हम।

- हसीब सोज़

ईरान की चेतावनी- इस्लामी देश इजराइल से रिश्ता तोड़ें

● पाकिस्तान की NATO जैसी फोर्स बनाने की सलाह ● कतर में इजराइल के खिलाफ जुटे 50 मुस्लिम देश

कतर (दोहा)। कतर की राजधानी दोहा में आज मुस्लिम देशों के 50 नेता इजराइल के खिलाफ एक खास बैठक के लिए इकट्ठा हुए हैं। यह बैठक अरब लीग और ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (OIC) ने बुलाई है।

इसका मकसद 9 सितंबर को कतर पर हुए इजराइली हमले का जवाब देना है। इस हमले में हमास के 5 मेंबर और एक कतरी सुरक्षा अधिकारी मारा गया था। यह हमला उस समय हुआ जब हमास की एक टीम गाजा में दो साल से चल रहे युद्ध को खत्म करने के लिए अमेरिका के प्रस्ताव पर बात करने दोहा में थी। आज की मीटिंग से पहले ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने मुस्लिम देशों से इजराइल के साथ रिश्ते तोड़ने

को कहा है। उन्होंने इस्लामिक देशों से एकजुट होने की अपील की। वहीं, पाकिस्तान ने सभी इस्लामी देशों को NATO जैसे जॉइंट फोर्स बनाने का सुझाव दिया।

विदेश मंत्रियों ने रविवार को बंद कमरे में मीटिंग की- विवार को इस्लामी देशों के विदेश मंत्रियों ने दोहा में इजराइल के खिलाफ कार्रवाई करने को लेकर बंद कमरे में एक बैठक की थी। इस दौरान कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान बिन जासिम अल थानी ने इजराइली हमले की कड़ी निंदा की और कहा कि कतर अपनी संप्रभुता की रक्षा के लिए जरूरी कदम उठाएगा।

फेसबुक से शुरू हुई लवस्टोरी का खौफनाक अंजाम

● प्रेमी से मिलने के लिए 600 किमी तक चलाई कार

जयपुर। राजस्थान के बाड़मेर में फेसबुक से शुरू हुई प्रेम कहानी का अंजाम बेहद खौफनाक रहा है। झुंझुनूं की आंगनबाड़ी सुपरवाइजर मुकेश कुमारी अपने प्रेमी शिक्षक मानाराम से मिलने के लिए 600 किलोमीटर की कार ड्राइव कर बाड़मेर पहुंची थी। लेकिन यहां उसे प्यार की जगह मौत मिली। प्रेमी ने शादी के दबाव से बचने के लिए लोहे की रोड से वार कर उसकी हत्या कर दी और शव को कार में रखकर हादसे का रूप देने की कोशिश की।

फेसबुक से हुई थी दोस्ती

चवा गांव निवासी शिक्षक मानाराम की अक्टूबर 2024 में फेसबुक पर 37 वर्षीय मुकेश कुमारी से दोस्ती हुई थी। यह दोस्ती धीरे-धीरे मुलाकातों और प्यार में बदल गई। मुकेश कुमारी अक्सर झुंझुनूं से बाड़मेर आकर मानाराम से मिलती थी। आरोपी मानाराम शादीशुदा है और पत्नी से तलाक का मामला कोर्ट में चल रहा है। पुलिस के मुताबिक मुकेश कुमारी ने मानाराम पर शादी के लिए दबाव बनाया था और इसी बात को लेकर दोनों में विवाद हुआ।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 16 सितंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

हिमाचल में खौफनाक हादसा

पिकअप के एक्सीडेंट में 5 की मौत, दो घायल

शिमला। हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के कोटखाई क्षेत्र में बड़ा सड़क हादसा हुआ है। हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार कोटखाई रामनगर के खोला कैंची के पास पिकअप गाड़ी

दुर्घटनाग्रस्त हुई है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार इस हादसे में चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि एक घायल ने अस्पताल ले जाते हुए रास्ते में दम तोड़ दिया। दो घायल हैं।

मृतकों में तीन नेपाली मूल के व्यक्ति शामिल हैं। एक मृतक की पहचान जोगिंदर सिंह पुत्र बालक राम निवासी खोला गांव के रूप में हुई है। हादसे के दौरान गाड़ी में कुल सात लोग सवार थे। हादसे के कारणों का पता नहीं चल पाया है। सूचना मिलने की पुलिस मौके पर पहुंची और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। घायलों को उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल भेजा गया है। शिमला रेफर एक घायल ने रास्ते में दम तोड़ दिया।

ओडिशा में पैर नहीं छूने पर टीचर ने विद्यार्थियों को पीटा

एक का हाथ टूटा, एक बेहोश

मयूरभंज। मयूरभंज जिले के एक सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय में छात्रों को शारीरिक दंड देने की घटना सामने आई है। शिक्षा विभाग ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए एक महिला शिक्षिका को निलंबित

कर दिया है। घटना खंडाडेउला सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय (बैसिंगा थाना क्षेत्र) की है। बीते गुरुवार को सहायक शिक्षिका सुकांति कर ने कक्षा 6, 7 और 8 के करीब 31 छात्रों को बांस की छड़ी से पीटा। आरोप है कि प्रार्थना सभा के बाद शिक्षक का पैर न छूने पर उन्होंने छात्रों को दंडित किया।

● वक्फ कानून पर सुप्रीम आदेश

तीन बदलावों पर स्टे पूरे वक्फ कानून पर रोक नहीं

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ संशोधन कानून पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। हालांकि कोर्ट ने सोमवार को कानून में किए गए 3 बड़े बदलावों पर अंतिम फैसला आने तक स्टे लगा दिया। इनमें वक्फ बोर्ड में गैर-मुस्लिम सदस्यों की नियुक्ति का नियम शामिल है।

CJI बीआर गवई और जस्टिस अगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने कहा

● **सेंट्रल वक्फ बोर्ड में 4 से ज्यादा गैर-मुस्लिम मेंबर बनाने पर रोक**

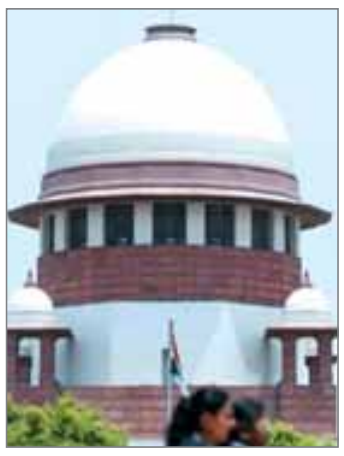

कि केंद्रीय वक्फ बोर्ड में गैर-मुस्लिम मेंबर्स की संख्या 4 और राज्यों के वक्फ बोर्ड में 3 से ज्यादा न हो। सरकारें कोशिश करें कि बोर्ड में नियुक्त किए जाने वाले सरकारी मेंबर्स भी मुस्लिम कम्युनिटी से ही हों। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में दाखिल 5 याचिकाओं पर 20 से 22 मई तक लगातार 3 दिन सुनवाई की थी। 22 मई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। वक्फ बोर्डों में गैर-मुस्लिमों की भागीदारी पर सुप्रीम

कोर्ट ने प्रावधानों पर रोक तो नहीं लगाई, लेकिन कुछ सीमाएं तय कीं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि केंद्रीय वक्फ बोर्ड में अधिकतम 4 और राज्य वक्फ बोर्ड में (11 में से) अधिकतम 3 गैर-मुस्लिम सदस्य ही रख सकते हैं। पहले इसमें अधिकतम सीमा तय नहीं थी। राज्य बोर्ड में सेक्शन 23 को बरकरार रखते हुए कोर्ट ने कहा कि जहां तक संभव हो, जो बोर्ड का पदेन सचिव भी होता है मुस्लिम समुदाय से ही नियुक्त किया जाए।

ओवैसी समेत 5 याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई हुई

वक्फ (संशोधन) कानून के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट ने 5 मुख्य याचिकाओं पर ही सुनवाई की। इसमें AIMIM सांसद असदुद्दीन ओवैसी की याचिका शामिल थी। याचिकाकर्ताओं की तरफ से कपिल सिब्बल, अभिषेक मनु सिंघवी और राजीव धवन और केंद्र की तरफ से सॉलिसिटर जनरल (SG) तुषार मेहता पेश हुए थे।

सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर मामले पर चेताया

गड़बड़ी मिली तो रद्द करेंगे

सुप्रीम कोर्ट में आज यानी सोमवार को बिहार में SIR (वोटर वेरिफिकेशन) के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई हुई। इस दौरान याचिकाकर्ताओं की तरफ से कहा गया कि चुनाव आयोग प्रक्रिया का पालन नहीं कर रहा है। नियमों की अनदेखी हो रही है। इस पर कोर्ट ने कहा- हम यह मानकर चलेंगे कि चुनाव आयोग अपनी जिम्मेदारियों को जानता है। अगर कोई गड़बड़ी हो रही है, तो हम इसको देखेंगे। अगर बिहार में SIR के दौरान चुनाव आयोग द्वारा अपनाई गई कार्यप्रणाली में कोई अवैधता पाई जाती है, तो पूरी प्रक्रिया को रद्द किया जा सकता है।

कोर्ट ने स्पष्ट किया कि वह बिहार SIR पर टुकड़ों में राय नहीं दे सकती। उसका अंतिम फैसला केवल बिहार में ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में SIR पर लागू होगा। मामले पर 7 अक्टूबर को अगली सुनवाई होगी। इससे पहले 8 सितंबर को हुई सुनवाई में कोर्ट ने कहा था- आधार पहचान का प्रमाण पत्र है, नागरिकता का नहीं। कोर्ट ने चुनाव आयोग को आदेश दिया था कि वोटर की पहचान के लिए आधार को 12वें दस्तावेज के तौर पर माना जाए।

अगर हिंदी गंगा है तो मराठी नर्मदा है : अजय बोकिल

भोपाल। भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान के दूसरे और अंतिम दिन 'राष्ट्र की प्राणधारा लोक भाषाएं' तथा 'हिंदी के वैश्विक परिदृश्य' पर व्यापक चर्चा हुई। 'हिंदी और मराठी के अंतर्सम्बन्ध' पर बोलते हुए वरिष्ठ पत्रकार एवं 'सुबह सवेरे' के कार्यकारी प्रधान संपादक अजय बोकिल ने कहा कि मप्र और छत्तीसगढ़ के महाराष्ट्र से लगे सीमावर्ती जिलों की बोलियों भीली, निमाड़ी, गोंडी और मालवी का रिश्ता महाराष्ट्र उत्तरी जिलो में बोली जाने वाली खानदेशी, वैदर्भी, हलबी और झडबोली से है। उन्होंने कहा कि हिंदी और मराठी में कई समानताएं हैं। दोनो संस्कृत से निकली हैं। हिंदी साहित्य का भक्ति युग महाराष्ट्र की संत परंपरा के बिना अधूरा है। अगर हिंदी गंगा है तो मराठी नर्मदा है।

उन्होंने कहा कि क्षुद्र राजनीति को अलग रखें तो हिंदी और मराठी के बीच अंतर्सम्बन्ध इतना मजबूत और गहरा है कि कोई इसे चाहे भी तो अलग नहीं कर सकता। क्योंकि हिंदी की व्यापकता, प्रांजलता, पाचकता, समावेशिता और संपर्क भाषा के रूप में महत्ता को मराठी भाषी खूब समझते हैं तो हिंदी भाषियों को पता है कि मराठी में जो शौर्य भाव है, जितनी रसिकता, जितनी विनोद प्रियता है, उतना ही सौजन्य भी है। सबसे बड़ी बात कि दोनो में मिट्टी की सौंधी खुशबू है, जिसे कोई कैद नहीं कर सकता। हिंदी साहित्य, पत्रकारिता और विज्ञान साहित्य में भी मराठीभाषियों का बड़ा योगदान है। हिंदी और उसकी बोलियों के अंतर्सम्बन्ध पर अजय बोकिल ने कहा कि हिंदी की असली ताकत उसकी बोलियां हैं। आज की भाषा में कहें तो आधुनिक हिंदी इन सशक्त बोलियों की स्मार्ट पैकेजिंग है।

इसी सत्र में रामबहादुर मिश्र ने अवधी,ब्रज और भोजपुरी भाषा और हिंदी के संबंध पर व्याख्यान दिया। उनका कहना था कि इन भाषाओं के शब्दों ने हिंदी का माधुर्य बढ़ाया है। डॉ. तेजी ईशा ने मैथिली भाषा और हिंदी के शब्दों की समानता और उनके बीच के अंतर को केंद्र में रखा। बुंदेली पर वक्तव्य देते हुए डॉ. सरोज गुप्ता ने कहा कि बुंदेली ऐसी भाषा है जिसे सदियों पहले राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ था। छत्तीसगढ़ी भाषा पर डॉ. सुधीर शर्मा का कहना था कि छत्तीसगढ़ी का इतिहास हजार साल पुराना है, तभी से यह हिंदी के साथ कांधा मिलाकर चल रही है। वरिष्ठ पत्रकार जयराम शुक्ल ने बघेली के योगदान पर सारगर्भित वक्तव्य दिया। इस सत्र का अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ.संतोष चौबे ने कहा कि हमे सभी भाषाओं में विभाजनकारी तत्व खोजने की जगह समानता के सूत्रो को महत्व देना चाहिए। इस सत्र का संचालन डॉ. शोभा जैन ने किया। इसी कार्यक्रम में दो पुस्तकों का विमोचन भी हुआ।

भाषा के नाम पर विवाद उचित नहीं

अनुष्ठान में चर्चाओं के समापन सत्र में हिंदी का वैश्विक परिदृश्य पर चर्चा हुई। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के कुलपति विजय मनोहर तिवारी की अध्यक्षता में पुरातत्व की भाषा विषय पर डॉ. मुकेश मिश्र ने कहा कि पुरातत्व की भाषा बहुत व्यापक है, इसे इसी दृष्टि से देखना होगा। हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर डॉ. जवाहर कर्नावट का कहना था कि आज जो विदेशों में हिंदी बोली जा रही है इसका श्रेया प्रवासी भारतीयों के साथ ही वहां बसे भारतवासियों को जाता है। समाचार माध्यमों की भाषा पर संजय द्विवेदी ने कहा कि समाचार पत्रों की भाषा में शुद्धता का अभाव झलकता है। सोशल मीडिया की भाषा पर ब्रजेश राजपूत ने कहा इस माध्यम पर नई पीढ़ी नए और संक्षिप्त शब्द गढ़ रही है, लेकिन इससे उनका लेखन कौशल प्रभावित हो रहा है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने भाषा के नाम पर खड़े किए जा रहे विवादों पर दुख जताया। सत्र का संचालन पत्रकार शिवकुमार विवेक ने किया।

'टैरिफ का सहारा लेकर आईटीए समझौते से बाहर निकल सकता है भारत'

संसदीय समिति ने सरकार से की सिफारिश

नई दिल्ली। अमेरिकी टैरिफ के बीच संसदीय समिति ने आईटीए समझौते को लेकर सरकार से बड़ी सिफारिश की है। संसदीय समिति ने कहा कि अमेरिका की ओर से लगाए गए टैरिफ का सहारा लेकर भारत अपने घरेलू उद्योग की रक्षा के लिए बहुपक्षीय सूचना प्रौद्योगिकी समझौते (आईटीए) से बाहर निकल सकता है या फिर इसके प्रावधानों पर बातचीत कर सकता है।

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे की अध्यक्षता वाली संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी स्थायी समिति ने अपनी रिपोर्ट में भारत द्वारा 1997 में

हस्ताक्षरित समझौते को आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र की अनेक समस्याओं के लिए जिम्मेदार ठहराया है। इनमें व्यापक व्यापार घाटा और अधिक उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के लाभ के लिए भारतीय निर्माताओं को अप्रतिस्पर्धी बनाना शामिल है। समिति ने कहा कि आईटीए के साथ भारत का अनुभव निराशाजनक रहा है। इसने भारत से आईटी/इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को लगभग समाप्त कर दिया। जबकि लागत में कमी और प्रौद्योगिकी तक पहुंच के संदर्भ में उपभोक्ताओं को होने वाले इसके लाभों को स्वीकार किया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने समिति को बताया कि विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत आईटीए के भागीदार सदस्य के रूप में भारत एकतरफा रूप से इससे बाहर नहीं निकल सकता।

अगले सत्र में समिति रिपोर्ट को स्वीकार करेगी

समिति ने पिछले सप्ताह अपनी रिपोर्ट स्वीकार कर ली और लोकसभा अध्यक्ष को सौंप दी। उम्मीद है कि संसद अगले सत्र में इसे स्वीकार कर लेगी। संसदीय निकाय ने समझौते से संबंधित सभी मंत्रालयों, विभागों और संगठनों को शामिल करते हुए एक उच्च स्तरीय अधिकार प्राप्त अंतर-मंत्रालयी समिति की सिफारिश की है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी, विदेश मंत्रालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा वित्त मंत्रालय के अलावा अन्य हितधारक भी शामिल होंगे, जो आईटीए 1.0 और आईटीए 2.0, उनके संभावित भविष्य के प्रभावों की जांच करेंगे तथा बदलती विश्व आर्थिक व्यवस्था और बदलते वैश्विक गठबंधनों को ध्यान में रखते हुए देश के आर्थिक और रणनीतिक हितों में आगे का रास्ता सुझाएंगे।

तेज बारिश का दौर थमा

10 साल में सबसे जल्दी शुरू हो रही मॉनसून की वापसी

नई दिल्ली। देश के अलग-अलग हिस्सों में हो रही बारिश का थमने का दौर शुरू हो चुका है। मौसम विभाग ने मॉनसून के वापसी को लेकर जानकारी दी है। आईएमडी का कहना है कि दक्षिण-पश्चिम (ग्रीष्म) मॉनसून रविवार को पश्चिमी राजस्थान के कुछ हिस्सों से वापसी शुरू हो गया। हालांकि, देश में मॉनसून के वापसी की सामान्य तारीख 17 सितंबर है। आम तौर पर, वापसी की प्रक्रिया 15 अक्टूबर को समाप्त होती है। ऐसा प्रायद्वीपीय भारत में शीतकालीन मॉनसून की शुरुआत से कुछ दिन पहले होता है।

पंजाब के बाढ़ग्रस्त इलाकों में पहुंचे लोकसभा नेता प्रतिपक्ष

राहुल गांधी ने अमृतसर में डूबी फसलें और टूटे घर देखे

अमृतसर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी आज (15 सितंबर) पंजाब दौरे पर हैं। वह सुबह करीब साढ़े 9 बजे अमृतसर एयरपोर्ट पर पहुंचे, जिसके बाद वह घोनेवाल गांव रवाना हुए। यहां उन्होंने बाढ़ प्रभावित लोगों से मुलाकात की और डूबी फसलें व टूटे घर देखे। उन्होंने गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब में माथा भी टेका। इसके बाद वह गुरदासपुर के गुरचक्क गांव पहुंचे, जहां उन्होंने उस जगह का दौरा किया, जहां बांध टूटने से खेत और घर जलमग्न हो गए थे। उन्होंने किसानों से मुलाकात की और फिर ट्रैक्टर पर सवार होकर आधा किलोमीटर दूर खड़ी अपनी गाड़ी तक पहुंचे, जहां से वह पहले पैदल आए थे।

इस दौरान उन्होंने मीडिया से कोई बातचीत नहीं की। इसके बाद उन्होंने दीनानगर में बाढ़ पीड़ितों से मुलाकात की। उन्हें पाकिस्तान बॉर्डर से सटे 7 गांवों में जाना था, लेकिन सुरक्षा कारणों से अधिकारियों ने उन्हें आगे न जाने की सलाह दी, जिसके बाद राहुल गांधी वापस चले गए।

पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त बोले- एसआईआर मधुमक्खी के छत्ते में हाथ डालने जैसा

नई दिल्ली। पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त एसवाई कुरैशी ने रविवार को चुनाव आयोग की तीखी आलोचना करते हुए कहा कि आयोग को कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के 'वोट चोरी' संबंधी आरोपों की जांच करवानी चाहिए थी, न कि उनके खिलाफ 'आपत्तिजनक और अपमानजनक' भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए था। कुरैशी ने PTI को दिए इंटरव्यू में कहा कि राहुल ने आरोप लगाते समय कई राजनीतिक शब्दों का इस्तेमाल किया था जैसे 'हाइड्रोजन बम' लेकिन यह महज 'राजनीतिक बयानबाजी' है।

प्रदेश में आदि सेवा पर्व 17 सितम्बर से दो अक्टूबर तक मनाया जायेगा

ट्राईबल विलेज विज़न–2030 का रोडमैप होगा तैयार

भोपाल(नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 17 सितम्बर को धार जिले के भैसोला में आयोजित कार्यक्रम में आदि कर्म योगी अभियान अंतर्गत 'आदि सेवा पर्व' का शुभारंभ करेंगे। जनजातीय गौरव और राष्ट्र निर्माण के संगम का प्रतीक आदि 'आदि सेवा पर्व' 2 अक्टूबर तक चलेगा। 'आदि सेवा पर्व' के दौरान जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, कौशल विकास, आजीविका संवर्धन, स्वच्छता, जल-संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण जैसी सेवात्मक गतिविधियाँ आयोजित होंगी। हर गतिविधि के केन्द्र में सेवा का भाव और आत्मनिर्भर भारत का संकल्प होगा ।

आदि कर्मयोगी अभियान के अंतर्गत रीजनल प्रोसेस लैब में मध्यप्रदेश के 12 राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स को पहले चरण में तैयार किया गया है। इसी क्रम में स्टेट प्रोसेस लैब में 41 जिलों के 272 डिस्ट्रिक्ट मास्टर ट्रेनर्स, डिस्ट्रिक्ट प्रोसेस लैब में 242 विकासखण्डों के 1210 ब्लॉक मास्टर ट्रेनर्स तैयार किये गये हैं, जिनके माध्यम से ब्लॉक स्तर पर 18150 क्लस्टर मास्टर ट्रेनर्स, 41 जिला स्तरीय एनजीओ पार्टनर्स, 20 विकासखण्ड स्तरीय एनजीओ कर्मी, 56470 आदि सहयोगी (शिक्षक / डॉक्टर / यूथ-लीडर्स / सामाजिक कार्यकर्ता), 203292 आदि साथी (स्वसहायता समूह सदस्य, जनजातीय जनप्रतिनिधि, स्वयंसेवक, सांस्कृतिक हस्तियां), 22588 आदि विद्यार्थी, इस प्रकार 303233 चेन्ज लीडर्स तैयार करने का लक्ष्य है।

ट्राईबल विलेज विज़न-2030- इस अभियान के अंतर्गत 'ट्राईबल विलेज एक्शन प्लान एवं ट्राईबल विलेज विज़न 2030' पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसके अंतर्गत प्रत्येक गाँव के लिए विकास का दीर्घकालिक रोडमैप तैयार किया जा रहा है, साथ ही 02 अक्टूबर 2025 को विशेष ग्राम सभा में 'विलेज एक्शन प्लान' का अनुमोदन प्राप्त किया जायेगा। ग्राम स्तर पर बनाये जाने वाले आदि सेवा केन्द्रों के माध्यम से सेवा वितरण, संतुष्टिकरण एवं शिकायत निवारण तंत्र का सुदृढ़ीकरण किया जाएगा।

आदि सेवा पर्व के दौरान कर्मयोगियों के माध्यम से जनजातीय बहुल ग्रामों में जनजातीय कार्य विभाग के अतिरिक्त पंचायत एवं ग्रामीण विकास, राजस्व, वन, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं शिक्षा आदि विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा ग्राम स्तरीय गतिविधियाँ, जनजागरण यात्राएं, क्षेत्र-भ्रमण, ग्रामीणों का उन्मुखीकरण, ग्राम विकास आवश्यकताओं के लिये विषय वार समूह चर्चाएं, ग्राम अपेक्षाओं के प्रदर्शन के लिए दीवार-लेखन, ग्राम विकास योजना तैयार करना, ग्राम विकास योजना के क्रियान्वयन के लिए विभाग वार जिम्मेदारियों का निर्धारण, ग्राम विकास योजना क्रियान्वयन कैलेण्डर का निर्माण, आदि सेवा केन्द्र का निर्धारण, आदि सेवा केन्द्र में शिकायत निवारण पंजी एवं अन्य आवश्यक पंजियों का संधारण आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।

भारतीय किसान संघ का प्रदेशव्यापी आंदोलन

ट्रैक्टर रैली के साथ पहुंचे किसान, सरकार को दी चेतावनी, मांगों को लेकर उतरे सड़कों पर

जबलपुर (नप्र)। भारतीय किसान संघ के नेतृत्व में किसानों की समस्या और प्रदेश सरकार के लेंड को लेकर सोमवार को पूरे प्रदेश में आंदोलन किया जा रहा है। प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर किसान प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंप रहे हैं। इसके लिए किसानों का ट्रैक्टर रैली से पहुंच रहे हैं। इधर, राजधानी में मुख्यमंत्री ने बिल पर सभी से संवाद की बात कही है। टीकमगढ़ मंडी में किसानों ने ट्रैक्टर-ट्रालियां खड़ी कर दिए।

जबलपुर में किसान कृषि उपज मंडी से ट्रैक्टर रैली निकालकर घंटाघर पहुंचेंगे और अपनी मांगों को लेकर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपेंगे। रैली को देखते हुए पुलिस ने घंटाघर क्षेत्र में बैरिकेडिंग कर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी है। इसी तरह टीकमगढ़ में भी किसानों ने 1 बजे रैली निकालना

शुरू कर दिया है।

यह रहेगा रैली का मार्ग- जिला मंत्री धनंजय पटेल ने बताया कि दोपहर 12 बजे किसान कृषि उपज मंडी में एकत्रित हुए हैं।। सभा के बाद ट्रैक्टर रैली मंडी से शुरू होकर दमोह नाका, रानीताल, यातायात चौक, तीन पत्ती चौक और नौदरा ब्रिज से होती हुई घंटाघर पहुंचेगी। यहां कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर आंदोलन समाप्त किया जाएगा। अगर मालवा में किसानों ने हाथ ठेले पर माइक रखकर प्रदर्शन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा- सभी से संवाद कर हित की सोचें- लैंड पुलिंग एक्ट को लेकर किसान संघ के विरोध पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से भास्कर ने राजधानी में हुए एक कार्यक्रम के दौरान पूछा कि किसान संघ इसका विरोध कर रहा है। क्या इस एक्ट में कुछ बदलाव हो रहे हैं। सीएम ने कहा कि हमारे द्वारा तो लैंड पूलिंग हो या सभी प्रकार के विकास के काम हो हमारा भाव है कि हम सबसे संवाद करते हुए सबके हित की बात सोच कर चलें विकास के क्रम को बनाकर रखें और विकास के रास्ते पर सभी को साथ लेकर चलेंगे। लगातार हमारे विकास के कामों का सबका समर्थन मिलता है, उसी भाव से हम चल रहे हैं।

एमपी में लैंड पूलिंग एक्ट के विरोध में प्रदर्शन

● भारतीय किसान संघ ने पीएम के नाम सौंपा ज्ञापन ● करणी सेना परिवार ने समर्थन दिया

भोपाल (नप्र)। 2028 में उज्जैन में होने वाले सिंहस्थ के लिए किसानों की जमीनों के स्थायी अधिग्रहण के मामले पर आरएसएस के अनुषांगिक संगठन भारतीय किसान संघ ने सोमवार को पूरे मप्र में विरोध प्रदर्शन किया। उज्जैन सिंहस्थ क्षेत्र में करीब 17 गांवों के किसानों की जमीनों का स्थायी अधिग्रहण को लेकर किसान और भारतीय किसान संघ आज प्रदेश भर में कलेक्टरों को ज्ञापन सौंपा। मंगलवार को उज्जैन में करीब 500 से ज्यादा ट्रैक्टरों की रैली निकाली जा रही है।

उज्जैन के विरोध प्रदर्शन में भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय महामंत्री मोहिनी मोहन मिश्रा भी शामिल हुए हैं। मिश्रा लैंड पूलिंग एक्ट को लेकर किसान संघ के आगे के आंदोलन की भी घोषणा करेंगे।

प्रधानमंत्री के नाम दी जाने वाली किसानों की मांगें

- खेती में लगने वाले बीज, खाद, दवाई और यंत्रों से जीएसटी पूरी तरह हटाया जाए।
- फसलों की आयात-निर्यात नीति किसानों के हित में बनाई जाए। जब हमारी फसल तैयार हो तब बाहर से आयात न किया जाए।
- खेती के सभी यंत्र, दवाइयां और बीज पर जीएसटी की दर बहुत कम रखी जाए।
- जीएम (जीन बदलकर बनाए गए) बीजों को देश में किसी भी हाल में आने की अनुमति न दी जाए।
- सरकार ने कपास पर जो आयात शुल्क हटाया है, उसे फिर से लगाया जाए।
- जमीन का अधिग्रहण केवल राष्ट्रीय महत्व और विकास की योजनाओं के लिए ही हो। पूरे देश में इसके लिए एक समान कानून बने।
- बैंकों की वजह से किसानों को योजनाओं का पूरा फायदा नहीं मिल पाता। हर जिले में एक अधिकारी नियुक्त किया जाए और किसानों की मदद के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी हो।
- कृषि लोन और किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) की प्रक्रिया आसान, ऑनलाइन और पारदर्शी की जाए। दस्तावेज देने के बाद भी परेशान करने वाले बैंक अधिकारियों पर कार्रवाई हो।
- जैसे मुद्रा लोन तुरंत मिलता है, वैसे ही किसानों को भी तुरंत कृषि लोन मिले।
- खेती में लगने वाले डीजल को जीएसटी के दायरे में लाया जाए।
- हर ग्राम पंचायत में वर्षा नापने की मशीन (वर्षा मापक यंत्र) लगाई जाए।
- हर जिले में कृषि कॉलेज खोले जाएं और छोटी कक्षाओं से ही बच्चों को कृषि की पढ़ाई कराई जाए।
- सभी फसलों की खरीदी पूरे साल समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर की जाए।
- किसान सम्मान निधि की राशि महंगाई के अनुसार बढ़ाकर 10,000 प्रति हेक्टेयर की जाए।
- जैविक खेती करने वाले किसानों को भी खाद की सब्सिडी जितना ही प्रोत्साहन दिया जाए।
- फसल बीमा योजना में सैटेलाइट से सर्वे सही नहीं है। इसे बदलकर फिर से खेत में जाकर जांच (नेत्रांकन) से नुकसान का आकलन किया जाए।
- किसानों को 5 लाख रुपए तक का कृषि ऋण (केसीसी) दिया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा- सभी से संवाद कर हित की सोचें

लैंड पुलिंग एक्ट को लेकर किसान संघ के विरोध पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से भास्कर ने राजधानी में हुए एक कार्यक्रम के दौरान पूछा कि किसान संघ इसका विरोध कर रहा है। क्या इस एक्ट में कुछ बदलाव हो रहे हैं। सीएम ने कहा कि हमारे द्वारा तो लैंड पूलिंग हो या सभी प्रकार के विकास के काम हो हमारा भाव है कि हम सबसे संवाद करते हुए सबके हित की बात सोच कर चलें विकास के क्रम को बनाकर रखें और विकास के रास्ते पर सभी को साथ लेकर चलेंगे। लगातार हमारे विकास के कामों का सबका समर्थन मिलता है, उसी भाव से हम चल रहे हैं।

भोपाल में साढ़े तीन लाख की शराब सहित तस्कर गिरफ्तार

● लग्जरी कार में भरकर विदिशा से भोपाल लाई जा रही थी शराब, घेराबंदी कर पकड़ा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में लग्जरी कार से शराब की तस्करी करने वाले तस्कर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से साढ़े तीन लाख रुपए कीमत की 254 लीटर अवैध शराब जब्त की गई है। यह शराब विदिशा से भोपाल लाई जा रही थी। जिसकी डिलिवरी अलग-अलग होटलों में दी जानी थी। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। आरोपी के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। टीआई रामबाबू चौधरी ने बताया कि रविवार रात को मुखबिर की सूचना पर बायपास चौराहा से घेराबंदी कर सफारी स्ट्रोम वाहन को रोका था। इसकी तलाशी में डिक्की और पिछली सीट में भरी 28 पेटी अंग्रेजी शराब मिली। जिसकी कीमत करीब साढ़े तीन लाख रुपए है। पूछताछ करने पर आरोपी की पहचान आदिल शेख (29) निवासी विदिशा के रूप में की गई।

अलग-अलग स्थान पर खपाई जानी थी शराब- आरोपी ने बताया कि वे भोपाल में अलग-अलग स्थानों पर इस शराब को खपाने वाला था। पूछताछ कर उसके सहयोगियों की जानकारी जुटाई जा रही है। आरोपी की कार को भी जब्त कर लिया गया है।

लिव इन में रह रहे युवक-युवती ने सुसाइड किया

● मंदसौर में अस्पताल से युवती की लाश लेकर भागा भाई

मंदसौर (नप्र)। मंदसौर जिले के पिपलिया मंडी में प्रेमी जोड़े ने सोमवार सुबह कीटनाशक पीकर सुसाइड कर लिया। युवक की पहचान मूंदड़ी निवासी अरुण मेघवाल (23) और युवती की पहचान नीमच जिले के शकरग्राम निवासी पवित्रा चौहान (21) के रूप में हुई है। दोनों को जिला अस्पताल ले जाया गया, लेकिन रास्ते में ही उन्होंने दम तोड़ दिया।

परिजन के मुताबिक पवित्रा शनिवार सुबह अपने घर से कॉलेज जाने के लिए निकली थी। दोपहर बाद उसका मोबाइल बंद हो गया। परिजन ने तलाश शुरू की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। सोमवार सुबह उन्हें उसके जहर पीने की जानकारी मिली। अस्पताल पहुंचकर परिवार ने हंगामा किया। भाई बिना पुलिस की इजाजत के शव उठाकर ले जा रहा था, जिसे पुलिस ने रोक लिया। पिपलिया मंडी चौकी प्रभारी धर्मेश यादव के मुताबिक अरुण की शादी 4 साल पहले टीना नामक महिला से हो चुकी थी, लेकिन वह टीना के साथ नहीं बल्कि पवित्रा के साथ लिव-इन मे रह रहा था।

अस्पताल पहुंचे परिजन ने हंगामा किया

पवित्रा के जहर पीने की सूचना मिलने के बाद उसके परिजन हॉस्पिटल पहुंचे और हंगामा करने लगे। पवित्रा का भाई उसकी लाश लेकर बाहर की ओर जा रहा था। मौके पर मौजूद कॉन्स्टेबल

ने रोक लिया। कुछ देर झूमाझटकी के बाद शव को वापस अस्पताल ले जाया गया।

युवक-युवती का पिछले 3 साल से अफेयर- चौकी प्रभारी धर्मेश यादव ने बताया कि युवक-युवती के बीच पिछले करीब 3 साल से अफेयर चल रहा था। दोनों 1 साल से लिव-इन-रिलेशनशिप में रह रहे थे। इस बीच युवती अपने घर आना-जाना जरूर करती थी। शनिवार सुबह वह कॉलेज जाने के लिए निकली थी, जिसके बाद वह वापस घर नहीं पहुंची। सोमवार सुबह दोनों ने नशीले पदार्थ का सेवन कर लिया।

'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार' अभियान महत्वपूर्ण

स्वास्थ्य कार्यकर्ता पूर्ण समर्पण से अभियान को बनायें सफल : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि 'स्वस्थ नारी सशक्त परिवार' अभियान का शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 17 सितम्बर को मध्यप्रदेश से करेंगे। अभियान में महिलाओं का सम्पूर्ण स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिर और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 20 हज़ार से अधिक स्वास्थ्य शिविर लगाये जाएँगे। इन शिविरों में नि:शुल्क जाँच और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जायेंगी। उन्होंने कहा कि यह अभियान मध्यप्रदेश के लिए महत्वपूर्ण अवसर है और एक चुनौती

भी है। मध्यप्रदेश में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में विगत वर्षों में सकारात्मक सुधार हुआ है। अभी भी हमें लंबी दूरी तय करनी है और इसके लिए आवश्यक है कि हर ज़िला, हर विकास खंड, प्रत्येक स्वास्थ्य कार्यकर्ता पूरे मनोयोग से संकल्प लेकर प्रयास करे। स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भी सहभागिता सुनिश्चित की जाये, ताकि अभियान का लाभ अधिक से अधिक नागरिक उठा सकें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सोमवार को निवास कार्यालय भोपाल से वीसी के माध्यम से स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान की तैयारियों की समीक्षा की।उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार अभियान की सफलता के लिए सबको मिलकर कार्य करना होगा। अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए सभी संचार माध्यमों का प्रभावी उपयोग किया जाए।

जैसे मां के चरणों में चारधाम, वैसे ही मातृभाषा की गोद में आनंदधाम : सीएम

10 मूर्धन्य साहित्यकार को राष्ट्रीय हिंदी भाषा सम्मान,प्रधानमंत्री ने वैश्विक मंचों पर बढ़ाया है हिन्दी का मान

मुख्यमंत्री को वॉव अवॉर्ड एशियन टीम ने सौंपा गोल्ड अवॉर्ड

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मां और मातृभाषा से ऊपर दूसरा कोई नहीं है। मां और मातृभाषा ही हमारी सबसे बड़ी पालक हैं। इनका स्थान कोई नहीं ले सकता है, जैसे मां के चरणों में चारधाम है, उसी प्रकार मातृभाषा की गोद में आनंदधाम है। जितना सटीक हमारी मातृभाषा का व्याकरण है, उतना ही समृद्ध हिन्दी साहित्य है। उन्होंने कहा कि 52 वर्णों में गुंथी हुई हिन्दी की वर्णमाला ही हमारी पहली पाठशाला है। जो अ से अनपढ़ बच्चे की अंगुली पकड़कर ज्ञ से ज्ञानी बना दे, वही हिन्दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। अंग्रेजी और मंदारिन के बाद हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी हमारी संस्कृति को जोड़ती है। हिन्दी के बिना हमारा साहित्य, हमारी भावनाएं और हमारी संवेदनाएं यकीनन अधूरी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को रवीन्द्र भवन के हंसध्वनि सभागार में हिन्दी दिवस के अनुक्रम में आयोजित भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में हिन्दी साहित्य लेखन और हिंदी के व्यापक स्तर पर लोकव्यापीकरण में योगदान देने वाले देश-विदेश के हिन्दी के 10 मूर्धन्य साहित्यकारों को विभिन्न राष्ट्रीय हिन्दी भाषा सम्मानों से सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने विभिन्न साहित्यिक पुस्तकों का विमोचन/लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम के दौरान ही महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा आयोजित विक्रमोत्सव 2025 को एशिया के शासकीय समारोह की विशेष श्रेणी में वॉव अवार्ड एशिया की टीम द्वारा मुख्यमंत्री डॉ. यादव को सम्मान स्वरूप गोल्ड अवार्ड भेंट किया गया। कार्यक्रम में स्वदेशी जागरण अभियान अंतर्गत देश हित में द सूत्र का अभियान Be इंडियन, Buy इंडियन, हमारी-लक्ष्मी-हमारे पास का शुभारंभ किया गया। आरएनटीयू के विश्व हिंदी ओलंपियाड एवं विश्वरंग के पोस्टर का लोकार्पण भी इस अवसर पर किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज ही अभियंता दिवस भी मनाया गया है। उन्होंने सभी को अभियंता दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि भारत एकमात्र देश है, जहां सर्वाधिक मातृभाषा हिंदी बोली जाती है। भगवान श्रीराम ने हजारों साल पहले मातृभाषा की गरिमा का उल्लेख किया था। आल्हा-ऊदल के महाकाव्य में हिंदी की सुंदरता देखने को मिलती है। रानी लक्ष्मीबाई और रानी दुर्गावती पर काव्य लिखकर इसे पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। राजाभोज के काल में कविता के रचनाकारों को स्वर्ण मुद्राएं देकर सम्मानित किया जाता था।

सम्मान एवं अलंकरण

राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान
श्री प्रशांत पोळ-जबलपुर (2024)
श्री लोकेन्द्र सिंह राजपूत- भोपाल (2025)

राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान
सुश्री रीता कौशल-ऑस्ट्रेलिया (2024)
डॉ. वंदना मुकेश- इंग्लैण्ड (2025)

राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान
डॉ. इंदिरा गाजिएवा-रूस (2024)
श्रीमती पदमा जोसेफिन वीरसिंघे (2025)

राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान
डॉ. राधेश्याम नापित-शहडोल (2024)
डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे-भोपाल (2025)

राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान
डॉ. के.सी. अजय कुमार-तिरुवनंतपुरम् (2024)
डॉ. विनोद बब्बर-दिल्ली (2025)

साहित्यिक पुस्तकों/प्रकाशनों का हुआ लोकार्पण/विमोचन

भारतीय भाषा आलोक - श्री राजेश्वर त्रिवेदी

समाज की भाषा का संकल्प - श्री विजयदत्त श्रीधर

भोजपुरी प्रतिभाएं - डॉ. धर्मेन्द्र पारे

शिवगीता, दत्तात्रेयगीता, कपिलगीता, अवधूतगीता, भागवतगीता, यमगीता, हरिहरगीता, भृगुगीता, श्रीकृष्ण चरित्र - श्री बंकिमचन्द्रम चट्टोपाध्याय

श्रीराधा द्वापर युग की महानायिका - श्री अशोक शर्मा एवं **लोक में वेदांत** - डॉ. सरोज गुप्ता

कार्यक्रम में लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह, विधायक श्री भगवानदास सबनानी, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी, संचालक संस्कृति श्री एमपी नामदेव, वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी सहित सम्मानित हुए साहित्यकारों के परिजन, विद्वतजन सहित बड़ी संख्या में हिंदी भाषा एवं साहित्य के सुधिजन और संस्कृति प्रेमी उपस्थित थे।

सिंहस्थ 2028

डेडलाइन खत्म, अमृत-1 में 47 हजार घर सीवेज से जुड़ना बाकी

भोपाल/उज्जैन (नप्र)। साल 2028 में होने वाले सिंहस्थ से पहले उज्जैन में अमृत-1 में शुरू हुआ सीवेज प्रोजेक्ट अब तक 90% ही पूरा हो सका है। बीते साल प्रोजेक्ट में हो रही देरी के चलते कंपनी को चेतावनी दी गई थी। इसके बाद में डेडलाइन जून तक बढ़ा दी गई। वहीं, अमृत-2 में स्वीकृत प्रोजेक्ट में से लगभग 15 प्रतिशत काम पूरा हुआ है। अमृत-2 में कुल 476 करोड़ से सीवेज नेटवर्क बिछाया जाना है। अमृत-2 में काम फरवरी में शुरू हुआ- अमृत-2 में दिए गए

फेज-1 और 3 का काम फरवरी में शुरू हुआ था। फेज-2 का काम मार्च में शुरू हुआ था। फेज-1 और 3 में अगस्त तक 18 प्रतिशत तो फेज 2 में 8प्रतिशत काम हुआ है। कुल 475 किमी सीवेज लाइन में से 80 किमी लाइन कंपनी बिछा चुकी है। दोनों ही फेज नवंबर 2027 तक पूरे किए जाने हैं। योजना के लिए केंद्र ने 278 करोड़ बजट दिया है। बाकी 198 करोड़ सिंहस्थ मद से मिलेंगे।

सिर्फ 13 हजार घरों को ही नेटवर्क से जोड़ पाए

हाल ही में हुई सिंहस्थ समीक्षा के मुताबिक अमृत-1 के सीवेज नेटवर्क में अभी 13 हजार घरों में सीवर कनेक्शन दिया जा चुका है। अभी 60-70 किमी सीवर लाइन बिछाई जानी बाकी है। लगभग 47 हजार घरों को नेटवर्क से जोड़ना है। मुख्य रूप से अब महाकाल परिसर के आसपास भीड़भाड़ वाले इलाके में काम होना बाकी है। कंपनी के मुताबिक भारी ट्रैफिक और श्रद्धालुओं की भीड़ के बीच काम धीरे-धीरे हो सका है। हाल ही में प्रोजेक्ट की डेडलाइन मार्च 2026 करने के लिए प्रस्ताव राजधानी में विभागीय मुख्यालय को भेजा गया है। नगरीय प्रशासन द्वारा दिसंबर-जनवरी में लगातार प्रोजेक्ट संभाल रही टाटा प्रोजेक्ट्स को काम की गति सुधारने की चेतावनी दी गई थी।

पंचायत, पीडब्ल्यूडी और पर्यटन काम में पीछे- सिंहस्थ 2028 के लिए बनी कैबिनेट कमेटी में स्वीकृत हो चुके कामों के मामले में पीडब्ल्यूडी, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, पर्यटन के अलावा स्वास्थ्य विभाग भी पीछे है। पर्यटन के 13, स्वास्थ्य के 3, आयुष के 2 और पंचायत विभाग का 1 काम प्रक्रिया में है पर कोई भी काम शुरू नहीं हो सका है। पीडब्ल्यूडी के सिंहस्थ से जुड़े 4 प्रोजेक्ट प्रक्रिया में हैं, 1 शुरू हो चुका है। कैबिनेट कमेटी से अब तक सिंहस्थ के 101 काम स्वीकृत हो चुके हैं, जिनकी लागत 9300 करोड़ से अधिक है।

नई दवाएं आईसीयू में बेअसर, पुरानी एंटीबायोटिक पर लौटे डॉक्टर

खत्म नहीं हो रहा बैक्टीरिया; न्यूट्रिशन के लिए खरीदे जा रहे 1000 करोड़ के सप्लीमेंट

भोपाल (नप्र)। आईसीयू में मौजूद क्रिटिक मरीज से लेकर कई सामान्य मरीज सही इलाज के बावजूद ठीक नहीं हो रहे, क्योंकि दवाओं का असर घट रहा है। यह स्थिति एंटी माइक्रोबियल रजिस्टेंस (एएमआर) की वजह से है। जो पूरी दुनिया में चिकित्सा विज्ञान के सामने एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी है।

यह कहना है एलएन मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग के एचओडी डॉ. डीपी सिंह का। उन्होंने कहा कि नए डॉक्टरों में मरीजों के प्रति स्नेह और मानवीय व्यवहार की कमी दिखने लगी है। मरीज और उनके परिजन में भी धैर्य की कमी है। जिससे अस्पतालों में विवाद की घटनाएं बढ़ी हैं।

दरअसल, भोपाल में 14 सितंबर को राष्ट्रीय चिकित्सा सम्मेलन का आयोजन किया गया। आधुनिक चिकित्सा: चुनौतियां और समाधान विषय पर चर्चा के लिए देशभर के 100 डॉक्टर, रिसर्चर और स्पेशलिस्ट शामिल हुए थे।

विशेषज्ञ डॉक्टरों ने इस बात पर भी चिंता जताई कि लोगों को विटामिंस और मिनरल्स दवाओं के तौर पर लेने पड़ रहे हैं। इससे एक हजार करोड़ रुपए से

अधिक का कारोबार सिर्फ विटामिन, मिनरल और न्यूट्रिशनल सप्लीमेंट्स का हो गया है।

विशेषज्ञों ने डॉक्टरों की नई पीढ़ी की चुनौतियों पर भी चिंता जताई है। उन्होंने कहा है कि कई तरह के बैक्टीरिया को खत्म करने में असरदार मेरोपेनम, पेनिसिलिन, अमॉक्सीसिलिन जैसी दवाएं अब आईसीयू में भी बेअसर साबित हो रही है। जबकि कभी बेअसर साबित हो चुकी सेपटोन और क्लोरोफेनिकोल अब दोबारा असर दिखाने लगी है। जिससे उन्हें डॉक्टर लिखने लगे हैं।

एक्सपर्ट ने बताया, इसलिए दवाएं हो रहीं बेअसर- डॉ. डीपी सिंह ने बताया- एंटीबायोटिक्स का प्रयोग बैक्टीरिया से होने वाले इन्फेक्शन के इलाज में होता है। यह बैक्टीरिया के स्ट्रक्चर और फंक्शन को टारगेट करती हैं। लेकिन शरीर में बार बार एंटीबायोटिक पहुंचने से शरीर में दवा के प्रति ही एंटी रजिस्टेंस पैदा हो जाता है। जिससे दवा का असर खत्म हो जाता है।

तालमेल की कमी से मरीजों का भरोसा टूटा

इंदौर से आए थायरॉइड, डायबिटीज और ओबेसिटी स्पेशलिस्ट डॉ. राजेश अग्रवाल ने कहा कि आज मेडिसिन से जुड़ी ढेरों रिसर्च हो रही हैं, लेकिन इनका लाभ मरीजों तक नहीं पहुंच पा रहा। एक ओर इन रिसर्च के आधार पर पूरा भरोसा कर इलाज किया जा रहा है, तो दूसरी ओर कई बार इन्हें लागू ही नहीं किया जाता। इस असमानता से मरीजों का डॉक्टरों पर भरोसा कम हो रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि रिसर्च के परिणामों का पूरा आकलन कर सर्वसम्मति से इन्हें लागू किया जाए।

ऐसे में जरूरी है कि आम लोगों के साथ अस्पतालों में भी एंटीबायोटिक पॉलिसी का सख्ती से पालन हो। डब्लूएचओ के अनुसार एएमआर के चलते हर साल 50 लाख लोगों की मौत हो जाती है। यही हाल रहा तो साल 2050 तक मौत का आंकड़ा 1 करोड़ के पार चला जाएगा।

चिकित्सा जगत के सामने सबसे बड़ी चिंता यह है कि पिछले 30 साल में नई एंटीबायोटिक्स की केवल दो ही क्लास सामने आई हैं। यानी मरीजों के इलाज के लिए विकल्प बेहद सीमित हैं।

संपादकीय

लंदन तक फैली आग

नेपाल से जन असंतोष की जो आग पिछले हफ्ते शुरू हुई, वो फ्रांस होते हुए अब यूके तक पहुंच गई है। हालांकि इन सभी के कारणों में थोड़ा थोड़ा फर्क है। नेपाल में युवाओं के असंतोष का मुख्य कारण भ्रष्टाचार और नेताओं संतानों की ऐयाशी थी तो फ्रांस में कल्याणकारी कार्यों में बजट कटौती मुख्य कारण था। अब यही आग लंदन तक पहुंच गई है। रविवार को वहां दो अलग अलग रैलियां निकली। एक थी 'यूनाइटेड किंगडम' तो दूसरी थी 'स्टैंड अप टू रेसिज्म।' एक में नस्लवाद और फासीवाद का विरोध था तो दूसरे में नस्लवाद और अवैध प्रवासियों के खिलाफ प्रदर्शन किया गया। यूनाइटेड किंगडम रैली में एक धुर दक्षिणपंथी कार्यकर्ता टॉमी रॉबिन्सन के आह्वान पर लंदन की सड़कों पर डेढ़ लाख लोग एकत्र हो गए। ये लोग नस्लवाद और अवैध प्रवासियों के खिलाफ तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अर सरकार के प्रति निराशा को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। इसे ब्रिटेन में अब तक सबसे बड़ा प्रदर्शन माना जा रहा है। इस विरोध मार्च का नेतृत्व जाने-माने कार्यकर्ता टॉमी रॉबिन्सन ने किया। लेकिन यह विरोध रैली जल्द ही हिंसक रैली में बदल गई। पुलिस के मुताबिक रैली के दौरान कई पुलिस अधिकारियों पर भी हमला किया गया। बता दें कि यह रैली 'स्टैंड अप टू रेसिज्म' के विरोध प्रदर्शन के साथ शुरू हुई, जिसमें 5 हजार के करीब लोग शामिल हुए। इस दौरान हिंसक झड़पों को रोकने के लिए पुलिस को दिन भर काफी मशक्कत करनी पड़ी। गौरतलब है कि टॉमी रॉबिन्सन ने एक्स पर अपने पोस्ट में लिखा था कि हम अपनी आजादी के लिए सेंट्रल लंदन की सड़कों पर एकजुट हो चुके हैं। लाखों लोग यहां शामिल हुए हैं। टॉमी रॉबिन्सन के नेतृत्व में ये विरोध मार्च ब्रिटेन में प्रवासियों के होटल के बाहर से शुरू हुआ। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने यूनियन जैक और रेड-व्हाइट सेंट और जॉर्ज क्रॉस झंडे लहराए गए। रैली में कई लोग अमेरिकी और इजराली झंडे लहराते भी दिखे। रैली में शामिल लोगों ने ब्रिटेन के पीएम कीर स्टार्मर के खिलाफ नारेबाजी भी की और उनके खिलाफ 'घर भेजो' वाली तख्तियां भी दिखाईं। ध्यान रहे कि टॉमी रॉबिन्सन का पूरा नाम स्टीफन याक्सली-लेनन है। वह खुद को सरकारी कमियों को उजागर करने वाला पत्रकार बताते हैं। ब्रिटेन में वह बहुत ही लोकप्रिय हैं। उन्होंने अपने भाषण में राजनेताओं पर अपने आइडियाज़ की नक़ल करने का आरोप लगाया और उनकी आलोचना की। उन्होंने दावा किया कि ब्रिटेन की अदालतों ने बिना दस्तावेज़ वाले प्रवासियों के अधिकारों को स्थानीय समुदाय के अधिकारों से ऊपर जगह दी है। कोर्ट ऑफ़ अपील ने पिछले महीने एस्सेक्स के एपिंग में बेल होटल में शरणार्थियों को ठहराने पर लगी रोक हटा दी थी। इस रैली में अमेरिकी उद्योगपति इलॉन मस्क वीडियो के जरिए शामिल हुए। मस्क ने कहा, हिंसा तुम्हारे पास आ रही है या तो लड़ो या मरो। मस्क ने ब्रिटेन में संसद भंग करने की मांग की। उन्होंने कहा, सरकार बदलनी होगी। खास बात यह है कि हिंसक रैली के वक्त ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर स्टेडियम में फुटबॉल मैच देख रहे थे। दूसरी तरफ स्टैंड अप टू रेसिज़्म की रैली में स्वतंत्र सांसद डायने एबट ने कहा कि हमने हमेशा इस नस्लवाद और हिंसा को हराया है। यहां असल सवाल यह है कि विकसित और आर्थिक रूप से सम्पन्न देशों में भी अब सरकारों को लेकर असंतोष क्यों भड़क रहा है? दरअसल इन देशों में अवैध आप्रवासियों और खासकर मुसलमानों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि उसको लेकर स्थानीय लोगों में नाराजी बहुत बढ़ गई है। हालांकि इसका ठोस इलाज किसी के पास नहीं है।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक 'नृप'

लेखक स्तंभकार हैं।

अस्थिरता में उलझा दक्षिण एशिया

श्रीलंका इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है। 2022 में जब इस द्वीप राष्ट्र में आर्थिक संकट ने भयावह रूप लिया, तब जनता ने राजपक्षे परिवार की सत्ता को उखाड़ फेंका। विदेशी कर्ज़ का बोझ, भ्रष्टाचार और राजनीतिक कुप्रबंधन ने आम लोगों को सड़कों पर उतरने को मजबूर कर दिया। महंगाई, बेरोज़गारी और बुनियादी वस्तुओं की कमी ने सामाजिक असंतोष को ज्वालामुखी में बदल दिया। यह आंदोलन केवल सरकार-विरोधी आक्रोश नहीं था, बल्कि यह संकेत था कि यदि जनता की आकांक्षाओं की उपेक्षा की जाएगी, तो सत्ताधारी वर्ग के लिए सत्ता की कुर्सी बचाना असंभव होगा।

दक्षिण एशिया आज जिस दौर से गुज़र रहा है, वह केवल आंतरिक अस्थिरता की कथा नहीं है, बल्कि वैश्विक राजनीति की गहरी छायाओं से आच्छादित परिदृश्य भी है। यह भू-भाग जो कभी प्राचीन सभ्यताओं, सांस्कृतिक बहुलता और समृद्ध परंपराओं का उद्गम स्थल रहा, आज अंतरराष्ट्रीय शक्तियों के हितों की प्रयोगशाला और प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन गया है। श्रीलंका से लेकर बांग्लादेश, नेपाल और म्यांमार तक, और पाकिस्तान से लेकर अफगानिस्तान तक, लगभग सभी देशों में उथल-पुथल, आंदोलनों और सत्ता संघर्ष का आलम है। इन घटनाओं ने दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया की एकरूपता और स्थिरता को गहरे संकट में डाल दिया है।

श्रीलंका इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है। 2022 में जब इस द्वीप राष्ट्र में आर्थिक संकट ने भयावह रूप लिया, तब जनता ने राजपक्षे परिवार की सत्ता को उखाड़ फेंका। विदेशी कर्ज़ का बोझ, भ्रष्टाचार और राजनीतिक कुप्रबंधन ने आम लोगों को सड़कों पर उतरने को मजबूर कर दिया। महंगाई, बेरोज़गारी और बुनियादी वस्तुओं की कमी ने सामाजिक असंतोष को ज्वालामुखी में बदल दिया। यह आंदोलन केवल सरकार-विरोधी आक्रोश नहीं था, बल्कि यह संकेत था कि यदि जनता की आकांक्षाओं की उपेक्षा की जाएगी, तो सत्ताधारी वर्ग के लिए सत्ता की कुर्सी बचाना असंभव होगा।

कुछ ही समय बाद, बांग्लादेश में भी आक्रोश की लपटें उठीं। शेख हसीना की सरकार, जिसने विकास और आर्थिक प्रगति के नाम पर स्थायित्व कायम किया था, अचानक विपक्ष और जनता के निशाने पर आ गई। बेरोज़गारी, बढ़ती महंगाई और लोकतांत्रिक संस्थाओं पर प्रश्नचिह्नों ने आंदोलन को जन्म दिया। बांग्लादेश का राजनीतिक परिदृश्य पहले ही विपक्ष और सत्ता के बीच गहरे ध्रुवीकरण का शिकार रहा है, लेकिन हालिया घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि जनता अब केवल स्थिरता और विकास के नारों से संतुष्ट नहीं होगी। उसे पारदर्शिता, जवाबदेही और वास्तविक जनतांत्रिक अधिकार चाहिए।

नेपाल की स्थिति और भी जटिल है। एक ओर राजशाही की यादें अब भी सामूहिक मानस में जीवित हैं, वहीं दूसरी ओर लोकतांत्रिक व्यवस्था अपने ही अंतर्विरोधों में जकड़ी हुई है। नेपाल का भूगोल, उसकी रणनीतिक स्थिति और भारत-चीन के बीच उसकी अहमियत ने इसे बाहरी हस्तक्षेप का सहज शिकार बना दिया है। वहां की राजनीति में लगातार बदलते गठबंधन, नेतृत्व की अस्थिरता और जनता की आकांक्षाओं की उपेक्षा ने असंतोष को हवा दी है। राजतंत्र समर्थक और कट्टरपंथी ताकतें इस असंतोष को भुनाने में जुटी हैं, जिससे नेपाल की सामाजिक संरचना में नई दरारें पड़ रही हैं।

इसी तरह म्यांमार, जहां सेना ने लोकतांत्रिक सरकार को सत्ता से बेदखल कर दिया, वर्षों से गृहयुद्ध और विद्रोह की चपेट में है। सेना और विपक्षी गुटों के बीच संघर्ष ने लाखों लोगों को विस्थापित कर दिया है। यहां विदेशी शक्तियों की भूमिका और भी स्पष्ट दिखाई देती है। अमेरिका और पश्चिमी देशों का दबाव, चीन की गहरी आर्थिक पैठ और क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन की लड़ाई ने म्यांमार को स्थायी अस्थिरता की ओर धकेल दिया है। म्यांमार की त्रासदी यह है कि यहां जनता की आकांक्षाएं बार-बार सत्ता के भूखे वर्गों और बाहरी शक्तियों की महत्वाकांक्षाओं के नीचे कुचल दी जाती हैं।

पाकिस्तान की स्थिति भी किसी से छिपी नहीं है। यह देश आज गंभीर आर्थिक संकट, राजनीतिक अस्थिरता और आतंकवाद की चुनौती से जूझ रहा है। एक ओर सेना और न्यायपालिका की भूमिका पर सवाल उठ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर लोकतांत्रिक ढांचा लगातार कमजोर होता जा रहा है। विदेशी कर्ज़ पर निर्भरता, मुद्रास्फीति और बढ़ते आतंकवादी हमलों ने आम जनजीवन को असुरक्षित बना दिया है। पाकिस्तान की त्रासदी यह है कि उसका राजनीतिक वर्ग सत्ता-संघर्ष में इतना उलझा हुआ है कि आम जनता की पीड़ा उसके लिए गौण हो गई है।

इन सभी घटनाओं की गहरी जड़ें वैश्विक राजनीति में निहित हैं। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया आज दो महाशक्तियों-अमेरिका और चीन-की प्रतिस्पर्धा का केंद्र बन चुका है। एक ओर चीन 'बेल्ट ऐंड रोड' जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं के माध्यम से इस पूरे क्षेत्र को अपनी आर्थिक और रणनीतिक पकड़ में लेना चाहता है, वहीं अमेरिका और उसके सहयोगी भारत, जापान व ऑस्ट्रेलिया के साथ 'क्वाड' जैसी साझेदारियों के जरिये इस प्रभाव को संतुलित करने की कोशिश कर रहे हैं। नतीजा यह है कि दक्षिण एशियाई देशों की आंतरिक राजनीति अब केवल उनकी अपनी नहीं रह गई है। हर आंदोलन, हर सत्ता परिवर्तन और हर अस्थिरता के पीछे विदेशी छायाएं मंडराती दिखती हैं।

यह क्षेत्र केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि रणनीतिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंद महासागर, मलक्का जलडमरूमध्य और हिमालयी गलियारों पर पकड़ पाने की जद्दोजहद ने बाहरी शक्तियों को यहां सक्रिय कर दिया है। भारत, जो स्वयं इस क्षेत्र का सबसे बड़ा लोकतंत्र और उभरती शक्ति है, उसके लिए यह स्थिति दोहरी चुनौती लेकर आती है। एक ओर उसे अपने पड़ोस की अस्थिरता का सामना करना है, दूसरी ओर बाहरी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव को भी संतुलित करना है।

दक्षिण एशियाई देशों की समस्याओं का सबसे बड़ा कारण यह है कि वहां के शासक वर्ग ने जनता की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को प्राथमिकता नहीं दी। लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित रह गया, जबकि शासन में पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन का अभाव रहा। आर्थिक विकास का लाभ कुछ वर्गों तक सीमित रहा, जिससे सामाजिक विषमता बढ़ी। यही असंतोष जब फूटता है, तो आंदोलन का रूप ले लेता है। और जब यह आंदोलन विदेशी हितों से टकराता है, तो बाहरी शक्तियां अपने-अपने हित साधने के लिए उसे हवा देने से नहीं चूकतीं।

आज की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि दक्षिण एशिया की जनता अपनी तकदीर खुद लिख सके। इसके लिए सबसे पहले इन देशों को अपने लोकतांत्रिक ढांचे को मजबूत करना होगा। जनता की भागीदारी, न्यायपूर्ण नीतियां और पारदर्शी शासन ही स्थिरता की नींव रख सकते हैं। आर्थिक नीतियों में संतुलन, शिक्षा और स्वास्थ्य पर निवेश और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करना आवश्यक है।

भारत की भूमिका इस पूरे परिदृश्य में निर्णायक हो सकती है। अपनी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत और लोकतांत्रिक अनुभव के बल पर भारत अपने पड़ोसियों को स्थिरता की राह दिखा सकता है। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि भारत केवल शक्ति-प्रदर्शन की नीति न अपनाए, बल्कि संवाद, सहयोग और आपसी विश्वास पर आधारित नीति का पालन करे। दक्षिण एशिया तभी स्थिर और समृद्ध हो सकेगा जब इसके देश आपसी मतभेदों को किनारे रखकर साझा भविष्य के लिए काम करेंगे।

दक्षिण एशियाई दरारें केवल क्षेत्रीय संकट नहीं हैं, बल्कि ये वैश्विक व्यवस्था के लिए भी गंभीर चुनौती हैं। यदि यह क्षेत्र अस्थिर रहता है, तो न केवल एशिया, बल्कि पूरी दुनिया में शांति और विकास प्रभावित होंगे। इसलिए आवश्यक है कि विदेशी शक्तियां यहां अपने-अपने हितों के बजाय क्षेत्रीय स्थिरता और जनता के कल्याण को प्राथमिकता दें।

दक्षिण एशिया की असली ताकत उसकी जनता है- युवा वर्ग, जो परिवर्तन की आकांक्षा रखता है। यदि यह ऊर्जा सकारात्मक दिशा में प्रवाहित की जाए, तो यह क्षेत्र पुनः अपने स्वर्णिम इतिहास की ओर लौट सकता है। लेकिन यदि इसे नजरअंदाज किया गया, तो विदेशी सायों के बीच यह भू-भाग लंबे समय तक अशांत और अस्थिर बना रहेगा। दक्षिण एशियाई देशों को यह समझना होगा कि उनकी असली लड़ाई बाहरी शत्रुओं से नहीं, बल्कि अपने भीतर की कमजोरियों और अंतर्विरोधों से है। इन्हें दूर कर ही वे आत्मनिर्भर, स्वतंत्र और सम्मानजनक भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

सामयिक

बालमुकुंद ओझा

लेखक स्तंभकार हैं।

प्रिंट मीडिया की साख आज भी कायम

हमारा पड़ोसी देश नेपाल सोशल मीडिया से उत्पन्न हिंसक क्रांति की आग से सुलग रहा है। नेपाल में चल रहे विरोध प्रदर्शनों और हिंसा को लेकर भारत का सियासी पारा भी हाई है। वहीं हमारे यहां के बयानवीर नेता भारत में भी अपने बयानों के जरिये आग लगाने का कुत्सित प्रयास कर रहे है। रही सही कसर टीवी चैनलों की बहस पूरी कर रहे है। विभिन्न न्यूज़ चैनलों पर बहस के दौरान कांग्रेस सहित इंडिया ब्लॉक के नेता भारत में भी ऐसी घटनाओं के घटित होने पर अपनी आग उगलने लगे है। संजय राउत और उदित राज जैसे नेता कहां पीछे रहने वाले है। सोशल मीडिया को कुछ लोगों ने अपना हथियार बनाकर नेपाल के हालात की भारत से तुलना करने लगे हैं। सोशल मीडिया पर कह दिया कि लोग चर्चा कर रहे हैं जिस तरह से नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश में सत्ता को जनता ने उखाड़ फेंका है, क्या भारत में ऐसा नहीं हो सकता।

देश के नामी गिरामी न्यूज़ चैनलों पर अभद्रता, गाली गलौज और मारपीट की घटनाएं अब आम हो गई है। न्यूज चैनल्स की डिबेट्स की भाषाई मर्यादाएं और गरिमा तार तार हो रही है। ऐसा लगता है डिबेट्स में झूठ और नफरत का खुला खेल खेला जा रहा है। डिबेट्स और चैनलों का ये गिरता स्तर लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। प्रमुख पार्टियों के प्रवक्ता जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग कर रहे है वह निश्चय ही निंदनीय और शर्मनाक है। देश में कुकुरमुत्तों की तरह न्यूज़ चैनलों की बाढ़ सी आ गई है। इन चैनलों पर प्रतिदिन देश में घटित मुख्य घटनाओं और नेताओं की बयानबाजी पर टीका टिप्पणियों को देखा और सुना जा सकता है। राजनीतिक पार्टियों के चयनित प्रवक्ता और कथित विशेषज्ञ इन सियासी बहसों में अपनी अपनी पार्टियों का पक्ष रखते है। न्यूज़ चैनलों पर इन दिनों जिस प्रकार के आरोप प्रत्यारोप और नफरती बोल सुने जा रहे है उससे लोकतंत्र की धज्जियाँ उड़ते देखा जा सकता है। बड़े बड़े और धमाकेदार शीर्षकों वाली इन बहसों को सुनकर किसी मारधाड़ वाली फिल्मों की यादें जाग्रत हो उठती है। एंकर भी इनके आगे असहाय नज़र आते है। कई बार छीना झपटी, गाली गलौज और मारपीट की नौबत आ जाती है। सच तो यह है जब से टीवी न्यूज चैनलों ने हमारी जिंदगी में दखल दिया है तब से हम एक दूसरे के दोस्त कम दुश्मन अधिक बन रहे है। समाज में भाईचारे के स्थान पर घृणा का वातावरण ज्यादा व्याप्त हो रहा है। बहुत से लोगों ने मारधाड़ वाली और डरावनी बहसों को न केवल देखना बंद कर दिया है अपितु टीवी देखने से ही तौबा कर लिया है। लोगों ने एक बार फिर इलेक्ट्रॉनिक के स्थान पर प्रिंट मीडिया की ओर लौटना शुरू कर दिया है। आज भी अखबार की साख और विश्वसनीयता अधिक प्रामाणिक समझी जा रही है। डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की अपेक्षा आज भी प्रिंट मीडिया पर लोगों की विश्वसनीयता बरकरार है। आज भी लोग सुबह सवेरे टीवी न्यूज़ नहीं अपितु अखबार पढ़ना पसंद करते है। प्रबुद्ध वर्ग का कहना है प्रिंट मीडिया आज भी अपनी जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन कर रहा है।

इस समय देश के न्यूज चैनलों और सोशल मीडिया पर नफरत और घृणा के बादल मंडरा रहे है। देश में हर तीसरे महीने कहीं न कहीं चुनावी नगाड़े बजने शुरू हो जाते है। इस साल बिहार में चुनाव होने वाले है। चुनावों के आते ही न्यूज़ चैनलों की बांछें खिल जाती है। चुनावों पर गर्मागरम बहस शुरू हो जाती है। राजनीतिक दलों के नुमाइंदे अपने अपने पक्ष में दावे प्रतिदावे शुरू करने लग जाते है। इसी के साथ ऐसे ऐसे आरोप और नफरत पैदा करने वाली दलीले दी जाने लगती है कि कई बार देखने वालों का सिर शर्म से झुक जाता है। यही नहीं देश में दुर्भाग्य से कहीं कोई घटना दुर्घटना घट जाती है तो न्यूज़ चैनलों पर बढ़चढ़कर ऐसी ऐसी बातों की झड़ी लग जाती है जिन पर विश्वास करना नामुमकिन हो जाता है। इसीलिए लोग इलेक्ट्रॉनिक के स्थान पर प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता को अधिक प्रमाणिक मानते है। इसी कारण लोगों ने टीवी चैनलों पर होने वाली नफरती बहस को देखनी न केवल बंद कर दी अपितु बहुत से लोगों ने टीवी देखने से ही तौबा कर ली।

गंगा जमुनी तहजीब से निकले भारतीय घृणा के इस तूफान में बह रहे हैं। विशेषकर नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद घृणा और नफरत के तूफानी बादल गहराने लगे है। हमारे नेताओं के भाषणों, वक्तव्यों और फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सुचिता के स्थान पर नफरत, झूठ, अपशब्द, तथ्यों में तोड़-मरोड़ और असंसदीय भाषा का प्रयोग धड़ल्ले से होता देखा जा सकता हैं। हमारे नेता अब आए दिन सामाजिक संस्कारों और मूल्यों को शर्मसार करते रहते हैं। स्वस्थ आलोचना से लोकतंत्र सशक्त, परंतु नफरत भरे बोल से कमजोर होता है, यह सर्व विदित है। आलोचना का जवाब दिया जा सकता है, मगर नफरत के आरोपों का नहीं। आज पक्ष और विपक्ष में मतभेद और मनभेद की गहरी खाई है। यह अंधी खाई हमारी लोकतान्त्रिक परम्पराओं को नष्ट भ्रष्ट करने को आतुर है। देश में व्याप्त नफरत के इस माहौल को खत्म कर लोकतंत्र की ज्वाला को पुर्नस्थापित करने की महती जरूरत है और यह तभी संभव है जब हम खुद अनुशासित होंगे और मर्यादा की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन नहीं करेंगे।

माता-पिता का बढ़ता दबाव और बच्चों से भावनात्मक दूरी

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

आज के समय में शिक्षा, करियर और प्रतिस्पर्धा को लेकर माता-पिता के भीतर एक तरह की बेचैनी और दौड़ देखी जा सकती है। हर कोई चाहता है कि उसका बच्चा क्लास में सबसे आगे रहे, हर प्रतियोगिता में अव्वल आए और समाज में एक प्रतिष्ठित पहचान बनाए। लेकिन इस चाहत और अपेक्षा की दौड़ में कहीं न कहीं बच्चे की मासूमियत, उसकी रुचियाँ और उसकी भावनाएँ दबने लगी हैं। परिणामस्वरूप, माता-पिता और बच्चों के बीच का भावनात्मक रिश्ता कमजोर हो रहा है और बच्चे मानसिक रूप से उनसे दूर होते जा रहे हैं। माता-पिता को लगता है कि आज के प्रतिस्पर्धी माहौल में यदि वे बच्चों पर लगातार ध्यान न दें और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित न करें तो उनका भविष्य अंधकारमय हो सकता है। नौकरी और करियर की अनिश्चितता, समाज की तुलना और अपनी अधूरी आकांक्षाएँ पूरी करने की चाह उन्हें बच्चों पर दबाव डालने के लिए मजबूर कर देती हैं।

* कोई चाहता है कि उसका बेटा डॉक्टर बने।
* कोई चाहता है कि बेटी इंजीनियर बने।
* कोई चाहता है कि बच्चा हर क्षेत्र में परफेक्ट दिखे।

इस दबाव के चलते बच्चा अपने सपनों की जगह माता-पिता के सपनों को जीने लगता है। जब बच्चे लगातार अपेक्षाओं और आदेशों के बोझ तले जीते हैं तो वे कई तरह की समस्याओं से जूझने लगते हैं-

1. तनाव और चिंता - पढ़ाई और परीक्षाओं का डर उनके भीतर असुरक्षा की भावना पैदा करता है।
2. आत्मविश्वास में कमी - हर बार तुलना किए जाने से बच्चे को लगता है कि वह कभी पर्याप्त नहीं है।
3. रुचियों का दब जाना - बच्चे संगीत, खेल या कला जैसे क्षेत्रों में अच्छे हो सकते हैं, लेकिन माता-पिता उन्हें केवल अंक और करियर तक सीमित कर देते हैं।
4. भावनात्मक दूरी - सबसे गंभीर समस्या यह है कि बच्चे अपने माता-पिता से खुलकर बात करना बंद कर देते हैं। उन्हें लगता है कि उनकी बातें समझी ही नहीं जाएँगी।

आजकल देखा जा सकता है कि बहुत से बच्चे घर में रहते हुए भी अकेलापन महसूस करते हैं। वे या तो मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में डूबे रहते हैं या फिर दोस्तों से जुड़ना पसंद करते हैं। माता-पिता से बातचीत सिर्फ पढ़ाई और करियर तक सिमट जाती है। जब भी बच्चा अपनी भावनाएँ साझा करना चाहता है, उसे यह डर सताता है कि कहीं डाँट न पड़ जाए या उसकी भावनाओं को गंभीरता से न लिया जाए। यही स्थिति धीरे-धीरे उन्हें भावनात्मक रूप से दूर कर देती है।

माता-पिता की भूमिका

यह सच है कि माता-पिता अपने बच्चों के भले के लिए ही उन्हें आगे बढ़ाना चाहते हैं। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि बच्चों की भावनाओं और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना उनकी पहली ज़िम्मेदारी है। एक अच्छा करियर तभी मायने रखेगा जब बच्चा खुश, आत्मविश्वासी और मानसिक रूप से स्वस्थ रहेगा।

1. **बच्चों की रुचियों को समझें** - यदि बच्चा संगीत या खेल में अच्छा है तो उसे प्रोत्साहित करें, न कि दबाएँ।
2. **सकारात्मक संवाद बनाएँ** - केवल अंक और रैंक की बात न करें, बल्कि बच्चों की छोटी-छोटी भावनाओं को भी महत्व दें।
3. **तुलना से बचें**- हर बच्चा अलग होता है। किसी की तुलना दूसरों से करने पर उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है।
4. **खुले माहौल का निर्माण करें** - ऐसा वातावरण बनाएँ कि बच्चा बिना झिझक हर बात साझा कर सके।
5. **संतुलन बनाएँ** - पढ़ाई और करियर के साथ-साथ खेल, मनोरंजन और परिवार के साथ समय बिताना भी जरूरी है।

समाज की ज़िम्मेदारी

केवल माता-पिता ही नहीं, बल्कि समाज को भी अपनी सोच बदलनी होगी। हर किसी की सफलता का पैमाना सिर्फ डॉक्टर, इंजीनियर या बड़े पदों तक पहुँचना नहीं हो सकता। कला, खेल, लेखन, विज्ञान, तकनीक-हर क्षेत्र में सफलता संभव है। समाज यदि बच्चों को उनकी विविध क्षमताओं के आधार पर सम्मान देना सीखे तो माता-पिता भी दबाव डालने से बचेंगे।

बच्चों का बचपन और उनका मानसिक स्वास्थ्य किसी भी डिग्री या करियर से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। माता-पिता यदि उन्हें प्यार, विश्वास और खुला संवाद देंगे तो बच्चे खुद ही आगे बढ़ेंगे और सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचेंगे। दबाव डालकर हासिल की गई सफलता स्थायी नहीं होती, बल्कि वह रिश्तों को कमजोर कर देती है। इसलिए ज़रूरी है कि माता-पिता बच्चों को प्रतियोगिता की अंधी दौड़ में न धकेलें, बल्कि उन्हें उनकी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार मार्गदर्शन दें। जब बच्चे अपने माता-पिता को अपना सबसे बड़ा साथी और सहारा समझेंगे तभी परिवार में सच्ची निकटता और खुशी बनी रहेगी।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हिन्दी के लड्डू

पंडिजी जाहिर तौर पर हिन्दी प्रेमी हैं और छुपे तौर पर अंग्रेजी प्रेमी। ऐसा है भई मजबूरी में आदमी को सब करना पड़ता है। देश पढ़े-लिखे और समझदार मजबूर लोगों से भरा पड़ा है। एक बार कोई मजबूरी का पल्ला पकड़ ले तो फिर उसे कुछ भी करने की छूट होती है। मजबूरी को समाज बहुत उपर का दर्जा देता है। लगभग संविधान की धारा की तरह यह माना जाता है कि मजबूरी का नाम महात्मा गांधी है। अब आप ही बताएं कि महात्मा जी नाम जुड़ा हो तो कोई कैसे मजबूर होने से इंकार करे। मजबूरी हमारी राष्ट्रीय अघोषित नीति है। सो पंडिजी को मजबूरी में अपने बच्चों को अंगेजी स्कूलों में पढ़वाना पड़ रहा है तो मान लीजिए कि कुर्बानी ही कर रहे हैं देश की खातिर।

अब आपको क्या तो समझाना और क्या तो बताना। जब आप ये व्यंग्य पढ़ रहे हैं तो जाहिर तौर पर समझदार हैं ही । जानते ही हैं कि हर आदमी को दो स्तरों पर अपने आचरण निर्धारित करना पड़ते हैं। रीत है जी दुनिया की, शार्ट में बोलें तो दुनियादारी है। सामाजिक स्तर पर जो हिन्दी प्रेमी हैं वे निजी तथा पारिवारिक स्तर पर अंग्रेजी प्रेमी पाए जाते हैं। समझदार आदमी सार्वजनिक रूप से हिन्दी का प्रचार प्रसार करता है, मोहल्ले मोहल्ले घूम कर माता-पिताओं को समझाता है, प्रेरित करता है कि भइया रे अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम की पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजो और देश को अच्छे नागरिक दो। इस बात में किसी को शक नहीं होना चाहिए कि हिन्दी को प्रेम करना वास्तव में देश को प्रेम करना है। और देश को प्रेम करना हर आम आदमी का परम कर्तव्य है। जिसे कुछ भी करने का मौका नहीं मिलता हो उसे देशप्रेम का मौका तो अवश्य मिलना चाहिए। हांलाकि हिन्दी वाले जरा ढिल्लू किस्म के हैं। उनके पास जरा सा तो काम है कि देशप्रेमी बना दो, कोई बहुत प्रतिभाशाली मिल जाए तो अपने जैसा गुरूजी (शिक्षक) बना दो, लेकिन वह भी हम से नहीं होता। सितंबर के महीने में देश भर में हिन्दी के लड्डू बंटवाए जाते हैं। सरकार के हाथ में लड्डू के अलावा कुछ होता भी नहीं है। साल में एक बार हिन्दी का लड्डू नीचे तक पहुंच जाए बस यही प्रयास होता है।

पंडिजी की चिंता यह है कि तमाम हिन्दी स्कूलों में बच्चों की संख्या कम होती जा रही है। गली गली में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल ऐसे खुल रहे हैं जैसे मोहल्ले के चेहरे पर चेचक के निशान हों। वे इस कल्पना से ही पगलाने लगते हैं कि क्या होगा अगर सारे बच्चे अंग्रेजी पढ़े निकलने लगेंगे। देश हुकूमत करने वालों से भर जाएगा तो कितनी दिककत होगी। आखिर राज करने के लिए रियाया भी चाहिए होगी। हिन्दी नहीं होगी तो प्रजा कहां से आएगी। राजाओं के लिए प्रजा और प्रजा के अस्तित्व के लिए हिन्दी को प्रेम करना जरूरी है। सरकार में मंतरी से संतरी तक इतने सारे हिन्दी प्रेमी भरे पड़े हैं कि पूछो मत। लेकिन एक भी आदमी आपको ऐसा नहीं मिलेगा जो अपने बच्चों को महंगे अंग्रेजी स्कूल में न पढ़ा रहा हो। ये त्याग है देश के लिए। सरकारी नौकर जनता का सेवक होता है। जनता मालिक है, मालिक ही बनी रहे, ठाठ से अपनी सरकार चुने और ठप्पे से राज करे हिन्दी में।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

फिल्म चर्चा

चंद्रशेखर साकल्ले

'द थर्सडे मर्डर क्लब'- बूढ़े जासूसों की ऊर्जा

फिल्मों में भी बूढ़ों को लाचार और कमज़ोर दिखाया जाता है। यदा-कदा किसी फिल्म में किसी बूढ़े को समाज में अन्याय का प्रतिकार करते या अपने परिवार की रक्षा के लिए संघर्ष करते दिखाया जाता है, लेकिन वह अपवाद स्वरूप होता है। आमतौर पर बूढ़ों को दूसरों की दया पर निर्भर बताया जाता है। हाल ही में नेटफ्लिक्स पर आई एक फिल्म ,'द थर्सडे मर्डर क्लब', बूढ़ों की इस स्थापित छबि का अतिक्रमण करती है। फिल्म के दस प्रमुख पात्रों में से सात पात्र 75 से अधिक उम्र के हैं। तीन युवा पात्र जहाँ अपनी मॉडलिंग, नौकरी और मज़दूरी में व्यस्त हैं वहीं चार बूढ़े जिनमें दो स्त्रियां हैं, पराधों की छानबीन करते हैं और अपराधियों को पुलिस के हवाले करते हैं , जबकि न वे पुलिस हैं और न ही कोई प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी चलाते हैं।

से वानिवृत्ति के दिन एक वाक्य बार-बार सुनाई देता है कि 'उम्र सिर्फ़ एक नंबर है', लेकिन अधेड़ से बूढ़ा होता व्यक्ति जल्द जान जाता है कि सक्रिय दुनिया में उसकी भागीदारी कम होती जा रही है। उसकी उपस्थिति कुछ सिकुड़ती जा रही है। वह घर और बाहर दोनों जगह अप्रासंगिक होता जा रहा है। वह स्वयं को उपेक्षित महसूस करता है। भारत ने इस तथ्य को बहुत पहले पहचान लिया था, इसलिए हमारे यहां वृद्धजनों को अतिरिक्त आदर देने की परंपरा है। घर में हर काम में उनकी सलाह ली जाती है। लेकिन पश्चिम में परिवार का ढांचा बेहद कमजोर है। माना जाता है कि यह दुनिया युवाओं की है। इसलिए वहां वृद्धाश्रमों की व्यवस्था है। जहां वृद्धजन हमउम्र साथियों के साथ रहते हैं।

फिल्मों में भी बूढ़ों को लाचार और कमज़ोर दिखाया जाता है। यदा-कदा किसी फिल्म में किसी बूढ़े को समाज में अन्याय का प्रतिकार करते या अपने परिवार की रक्षा के लिए संघर्ष करते दिखाया जाता है, लेकिन वह अपवाद स्वरूप होता है। आमतौर पर बूढ़ों को दूसरों की दया पर निर्भर बताया जाता है। हाल ही में नेटफ्लिक्स पर आई एक फिल्म ,'द थर्सडे मर्डर क्लब ', बूढ़ों की इस स्थापित छबि का अतिक्रमण करती है। फिल्म के दस प्रमुख पात्रों में से सात पात्र 75 से अधिक उम्र के हैं। तीन युवा पात्र जहाँ अपनी मॉडलिंग, नौकरी और मज़दूरी में व्यस्त हैं वहीं चार बूढ़े जिनमें दो स्त्रियां हैं, पराधों की छानबीन करते हैं और अपराधियों को पुलिस के हवाले करते हैं , जबकि न वे पुलिस हैं और न ही कोई प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी चलाते हैं।

कूपर्स चेज एक बड़ा परिसर है , जिसमें वृद्धाश्रम,चर्च और एक कब्रिस्तान है। वृद्धाश्रम में पचास-साठ बूढ़े रहते हैं।यहाँ बूढ़े चित्रकारी करते हैं, आर्चरी करते हैं और लामा पालते हैं। बूढ़े साथ -साथ मौज-मस्ती करते हैं।खाते हैं,पीते हैं और नाचते हैं। कूपर्स चेज के दो हिस्सेदार हैं, एक इयान बेंथम और दूसरा टोनी करन। इयान पर उसकी पत्नी ने तलाक का मुकदमा दायर कर रखा है और भारी धनराशि माँग रही है। इयान कूपर्स चेज के वृद्धाश्रम को बेंक्रेट हॉल में बदलना चाहता है और चर्च और कब्रिस्तान को हटाकर फ्लैट बनाकर बेचना चाहता है।टोनी करन इसके विरुद्ध है क्योंकि उसकी मौसी कूपर्स चेज में रहती है। इयान के अनुसार इन चिड़चिड़े बूढ़ों का समय ख़त्म हो चुका है और उन्हें कहीं और चले जाना चाहिए। इयान टोनी से छिपा कर उनके बँधुआ मज़दूर बोडेन को कब्रों की खुदाई का आदेश देता है।

कूपर्स चेज में रहने वालों में रॉन है जो रिटायर्ड यूनियन लीडर हैं,जिसकी अपने ज़माने में धाक थी।रॉन का बेटा जेसन मॉडलिंग करता है और कहीं और रहता है। इब्राहिम आरिफ फौज में मनोचिकित्सक था। उसने शादी नहीं करी। जॉयसी रिटायर्ड नर्स है। उसे केक बनाने का शौक है। उसकी बेटी संपन्न है और उसे अपने साथ रखना चाहती है, पर वह अपनी उम्र के लोगों के साथ रहना चाहती है। एलिजाबेथ ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस से रिटायर्ड है,उसके पति को अल्जाइमर है। यह चारों 'द थर्सडे मर्डर क्लब' के सदस्य हैं। चारों गुरूवार को क्लब के हॉल में अपराधों पर चर्चा करते हैं, खासकर हत्याओं की छानबीन करते हैं। उन दिनों वे एक पुरानी हत्या की जांच कर रहे थे। हत्या क़रीब पचास साल पहले हुई थी। एलिजाबेथ की सीक्रेट सर्विस की पुरानी साथी पेनी ग्रे ने इस हत्या की जानकारी दी थी। उसके अनुसार हत्यारा पकड़ा नहीं जा सका था। युवा एंजिला की उसके अपार्टमेंट में हत्या हो जाती है। शक के दायरे में उसका बायफ्रेंड पीटर आता है, पर सबूतों के अभाव में वह बरी हो जाता है और फिर गायब हो जाता है। पेनी ग्रे को पक्का विश्वास था कि हत्या पीटर ने ही की थी। पेनी ग्रे असाध्य बीमारी के चलते कोमा में थी, उसका पति जॉन उसकी सेवा में लगा था। इसी बीच परिस्थिति नया मोड़ लेती है। टोनी करन की उसके घर पर हत्या हो जाती है। शक इयान पर जाता है। वृद्धाश्रम के रहवासी विरोध प्रदर्शन करते हैं। प्रदर्शन का नेतृत्व रॉन करता है।

क्लब के सदस्य इन हत्याओं की जांच शुरू करते प्रदर्शन के दौरान वहाँ आता है और कोई जहरीली सुई चुभोकर इयान की हत्या कर देता है।

हैं। वे अपने साथ एक युवा महिला कांस्टेबल को भी मिला लेते हैं। एलिजाबेथ को धमकी मिलती है कि वह अपनी जांच रोक दें। एक बुके के साथ लगी पर्ची में यह धमकी लिखी होती है। बुके के फूलों की दुकान पर उसकी मुलाकात बाबी टेनर से होती है जो कूपर्स चेज का तीसरा गुप्त हिस्सेदार और डॉन है। एलिजाबेथ टेनर से सौदा करती है कि वह पुलिस को उसके अड्डे की जानकारी नहीं देगी जोकि यह फल की दुकान है ,बदले में वह कूपर्स चेज को जॉयसी की बेटी जुआना को बेच दे। ट्रेनर सौदा मान लेता है। जांच में आगे पता चलता है कि टोनी करन की हत्या इयान और टोनी के बँधुआ मज़दूर बोडेन ने की थी। बोडेन को अपने देश पोलेंड जाना था। वह अपनाया पासपोर्ट लेने टोनी के पास गया था । टोनी ने पासपोर्ट देने से मना कर दिया। बातचीत की गर्मी में बोडेन ने टोनी की हत्या कर दी।

पचास साल पहले एंजिला की हत्या की जाँच कर रही पेनी ग्रे को जब मालूम हुआ कि हत्यारा पीटर सबूतों के अभाव में छूट गया है तो नारीवादी पेनी ने पीटर की हत्या कर दी। पेनी और उसके पति जॉन ने पीटर की लाश कूपर्स चेज के कब्रिस्तान में एक कब्र में रख दी। बोडेन को खुदाई में एक कब्र में दो लाशें मिली। एलिजाबेथ को पुलिस कांस्टेबल ने बताया कि उनमें से एक लाश पीटर की है। एलिजाबेथ ने यह बात जॉन को बताई और कहा कि उसने ही हत्या कर लाश कब्रिस्तान में छिपाई है। जॉन ने अपराध स्वीकार किया। उसने कहा कि कब्रों की खुदाई में पीटर की लाश का राज खुलने के डर से उसने इयान की हत्या कर दी थी। इस तरह बूढ़े जासूसों की सक्रियता से ताज़ी और पचास साल पुरानी हत्याओं का रहस्य खुलता है और कूपर्स चेज भी सुरक्षित हो जाता है।

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

अपनी ज़िंदगी के गवाह ..... खुद हम

तु म अपने आप को आसमाँ छूते देख रहे हो। देख रहे हो तुम स्वस्थ, धनी, सबकी सेवा करने वाले हो खुशमिज़ाज ज़िंदादिल हो रोने के लिये तुम्हारे पास कुछ रोना नहीं, दोस्त, रिश्तेदार, परिवार सब तुम्हारे पास है और सच मानो दूसरों से ज़्यादा तुम अपनी ज़िंदगी के गवाह हो क्योंकि जो तुमने अपनी ज़िंदगी में लोगों को बताया या दिखाया नहीं, वो सिर्फतुम ही जानते हो तो अपने किये के गवाह भी तुम ही हो। जब तक तुम सुखी, संपन्न, संतुष्ट हो तब तक तुम सबको साबित करते हो अपनी ज़िंदगी तुमने संवारी है उसके गवाह भी तुम हो जिम्मेदार भी तुम हो, पर जहाँ ज़िंदगी में कुछ गड़बड़ हुई तो तुम्हारी उंगली दूसरों पे उठ जाती है कि फलाँ ने ऐसा किया तो मेरी ज़िंदगी में बुरा हुआ। जब अच्छा हुआ था, तब फलाँ कहाँ था ? दरअसल में अपनी ज़िंदगी की जिम्मेदारी गवाह बनना परवरिश में ही नहीं सिखाया जाता। स्कूल में टीचर ने डाँटा बच्चे ने घर आकर शिकायत की। वह गवाह था कि वो पढ़ाई के समय बात कर रहा था बजाय टीचर से क्षमा मांगने के उसकी मम्मी लड़ने पहुँच गई तो आपने उस बच्चे को गलती महसूस करना, अपनी जिम्मेदारी के गवाह बनना नहीं सिखाया बल्कि उसने झूठ बोलना सीखा। मुझे पता है मैं अपनी माँ से खूब लड़ती थी कि आपने हमें अपराध बोध से ग्रसित रहना सिखाया। दरअसल माँ कहती थी कि अगर तुम्हारे साथ कुछ भी गलत हो तो पहले सोचो तुम्हारे साथ ही ऐसा क्यों क्योंकि उस एकांत के गवाह तुम हो जिस समय कुछ ऐसा हुआ कि प्रत्युत्तर में सामने वाले ने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया ऐसे में हम धड़ाम से कह देते थे हमने ऐसा कुछ नहीं किया पर माँ हमें पूरा एक दिन सोचने को देती थी, मैं महसूस करती थी कि शायद उस फलाँ फलाँ वक्त पर मैंने उसके प्रति ऐसा उपेक्षित व्यवहार किया तभी

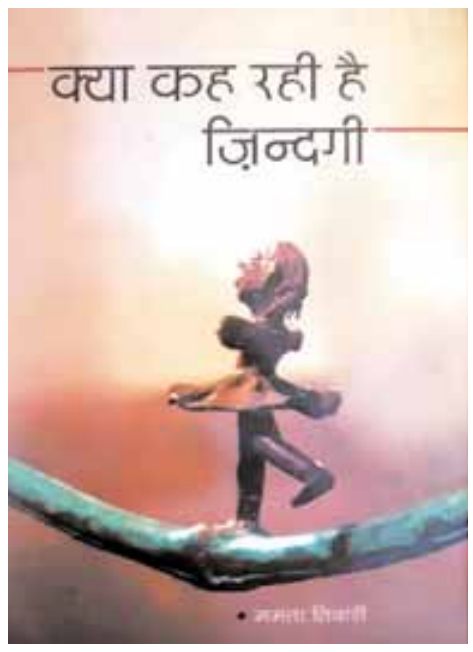

उसने मेरे साथ ऐसा किया चलो हिसाब-बराबर और बात आई गई हो जाती। कई बार बिना कुछ किये हम अपने विचारों से भी मौन बैठकर लोगों के प्रति दुर्भावना रखते हैं भले ही उनके सामने आते ही मीठा व्यवहार करते हैं ये वो फिर दोहरा और दोगला व्यवहार हुआ भले ही सामने वाला आपसे प्रसन्न हुआ पर अपनी एकांत सोच के इकलौते गवाह आप हैं तो क्यों ना हम अपनी अच्छी सोच, अच्छे विचार व्यवहार के साक्षी बने। साक्षी भाव में रहना हमारे लिये आईने के समान होता है जिसमें आप जैसे हो वैसे ही नज़र आते हो। पर कई बार हम अपना आईना भी प्रोग्राम कर लेते हैं जिसमें हम खुद को अच्छे से अच्छा नज़र आते हैं

.....

हमें हर वक्त ये क्यों लगता है, कि
हम सही हैं
क्या जो दिखाई देता है आईने में
हम वही हैं तो अपने निष्पक्ष आईने को सामने रखें और उसमें अपनी गल्तियों को भी स्वीकारें वैसे भी आपको शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं है ये ''एकांत साक्षी भाव'' होगा जिसमें आप अपनी गल्तियों अच्छाईयों के गवाह होंगे तो जल्द ही ऐसा आईना बनाये, मुस्कुरायें और पूछें खुद से सुबह सवेरे और क्या कह रही है ज़िंदगी .?

अचानक ये क्या हो गया
आईने से मेरा चेहरा खो गया
मैंने जिसे लेकर झांका था उसमें कभी
दिखता तो नहीं वैसा अभी
आईनों की बड़ी खराब आदत है ये
खुद तो बदलते हीं
बस चेहरे बदल देते हैं
और हम हैं कि गुमशुदा से
अपना पता पूछते फिरते हैं
कभी आईनों को बदल के देखो
तब चलेगा पता कि
दूसरों के आईने में
हम कैसे दिखते हैं ..... ?

कला

पंकज तिवारी

लेखक कला समीक्षक हैं।

ललित कला अकादमी की राष्ट्रीय प्रदर्शनी की भव्यता

भा रतीय कलाकारों एवं कृतियों में विविधता है, मौलिकता के साथ ही अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति और क्रियात्मकता से भरा-पूरा संस्कार एवं संस्कृतियों वाला विचार है या यूँ कहें कि एकता से बंधे रहने वाला परिवार है भारतीय कलाकारों का जो पिछले कई वर्षों से पाश्चात्य की चकाचौंध के चक्कर में किसी अनजान से मार्ग पर भटकता अपनी विरासत को भूला रातोंरात आसमान छू लेने का आकांक्षी बना भटक रहा हो, वाली प्रवृत्ति से ग्रसित रहा पर इस बार, भारत की राष्ट्रीय कला अकादमी, ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित 64वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी जिसका उद्घाटन 5 अगस्त, 2025 को नई दिल्ली में एक भव्य समारोह के रूप में हुआ, जिसमें भारत की समृद्ध दृश्य विरासत और इसके गतिशील समकालीन कला परिदृश्य का जश्न मनाया गया, में कृतियों को देखकर लगा कि देश अपने विरासत को लेकर जाग रहा है। प्रदर्शनी 15 सितंबर 2025 तक आयोजित हुई। यहाँ प्रदर्शित कृतियों में बहुत पहले कच्चे मकानों में प्रयुक्त होने वाले मिट्टी के बने खपड़े, घोरिया, खड़ांऊँ, घड़े, साधू-संतों की वैश्विक स्तर की चर्चा, आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य, परिवक्व विचारों की गहनता के साथ ही आधुनिकता का भी बढ़िया संगम दिखा। अकादमी के कला दीर्घा में दर्शकों के पास कृतियों से घंटों संवाद करने, उन्हें निहारने, समझने और जुड़ने का पूरा मौका रहा। वहाँ के वातावरण को भी इस तरह से तैयार किया गया था कि दर्शक आराम से न चाहते हुए भी घंटों गुफ्तगू कर सकें। मैं तो कई बार और अकेले, अनजान बन कर गया और घंटों-घंटों बतियाया कृतियों से, दुतरफा संवाद का साक्षी बना और तब जाकर ये कहने की हिम्मत कर सका कि पिछले कई वर्षों में मैंने तो ऐसी प्रदर्शनी नहीं देखी। प्रस्तुत राष्ट्रीय प्रदर्शनी में पूरे देश से 5,900 से अधिक कलाकृतियों में से द्वि-स्तरीय कठोर जूरी प्रक्रिया से गुजरने के बाद 283 कलाकृतियों का चयन किया गया जिसमें दृश्य कला के सभी माध्यमों को स्थान मिला, हर विचार, अभिव्यक्ति को एक विशाल मंच मिला और इस बार की जो सबसे बढ़िया खूबी रही वो ये रही कि कृतियों के बिक्री के भी रास्ते खोले गए जिससे कलाकारों में आत्मनिर्भरता की प्रवृत्ति का भी भान हुआ और कृतियाँ अच्छी कीमतों में बिकीं भी। उद्घाटन के अवसर पर 20 कलाकारों को ललित कला अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया जहाँ शॉल, प्रशस्ति-पत्र और 2,00,000 का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि। (ऋ01/04/01)

कैल्शियम, प्रोटीन, वशा, लैक्टोज, अमीनो एसिड जैसे पदार्थों से भरपूर, उत्तम, पौष्टिक दूध देने वाली गायों को जिस प्रकार श्रेष्ठता के आवरण में रखा जाता है, सत्कार किया जाता है और दुग्ध दोहन हेतु उपयोग किया जाता है उसी प्रकार हमें भी प्रतिदिन विशेष, उत्तम, रुचिकर, आवश्यक, पदार्थों, विषयों, वस्तुओं, ज्ञान आदि को उत्पन्न करने या विकसित करने या क्रियान्वित करने वाले चतुर विद्यावान, विद्वान, कलाविद्, विचारक आदि को प्राप्त करने का प्रयास करने चाहिएं, संपर्क साधने का प्रयास, सानिध्य प्राप्ति का प्रयास या सभी गुणों के उत्पादक श्रेष्ठ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। गुणी व्यक्ति, ज्ञानी, गुरु, आचार्य, रक्षा के लिए राजा और उत्तम शिल्प हेतु श्रेष्ठ शिल्पी की सेवा, आराधना करनी चाहिए। अकादमी के तरफ से कलाकारों के साथ भी ऐसा ही हुआ।

निलेश रविन्द्र वेदे के 'आई, मी माइसेल्फ' कृति में कैलिग्राफी, टेक्सचर, गम्भीर रंगों और सुन्दर हाथों, देह की बनावट में परिपक्वता स्पष्ट दर्शित है इसके साथ ही विपरीत परिस्थितियों में भी आत्मज्ञान, ध्यान के भरोसे हम कैसे अपने आप को अपने पूर्ण रूप में प्राप्त कर सकते हैं को दर्शाया गया है। कलाकार कश्यप जयंत पारिख के 'चतुरंग' जहाँ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को ध्यान में रखकर इस कृति का सृजन किया गया है, जहाँ बोल्ड रेखाओं की निडर यात्रा है, जहाँ लोक शैली, लोक तंत्र के साथ ही लगभग सभी संकेतों का प्रयोग है। सूर्य, चंद्र, त्रिषूल, शंख आदि इस कृति में विविधता को भी एकता में पिरोने का कार्य करते हैं। वहीं गिरिराज शर्मा की कृति भी अपने अलग विचार के साथ उपस्थित हैं। गहनता के साथ संवाद को आतुर है। आँखों में उम्मीद का सागर जबकि परिस्थितियां बिल्कुल भिन्न, फटे-पुराने बिल्कुल चीथड़ों में लपटे एक बालक को बखूबी दर्शाया है पी. प्रेमचंद्र सिंह ने। इस कृति में कलाकार के दर्शन में कितनी संवेदनशीलता है साफ झलकती है और विशेष बात ये कि इस परिस्थितियों से जूझने के बाद भी उम्मीद की यही है जो मुझे बदलने पर मजबूर करेगा और मैं मजबूती के साथ अपने रूप में आ पाऊंगा वाली हाल है। पार्थ मंडल की कृति 'द युनिवर्सल मीटिंग' में बिल्कुल ही सादे परिधान में महान आत्माओं को गढ़ा गया है और यहाँ शायद सभी अवतारों को दर्शाने का प्रयास भी दिखता है। टेम्परा कलर के खूबियों के साथ ही जो सबसे बढ़िया खूबी है वो हर एक चेहरे पर मीटिंग को लेकर गहन चिंतन, गम्भीरता है जो कहीं से भी खटक नहीं रही है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ ही हनुमान आदि देवताओं को बिल्कुल नये रूप में देखा जा सकता है। कल्पनाशीलता कमाल की है। बसॉल्ट स्टोन से निर्मित 'अशीर्षक' कृति में वैभव मारुति मोरे

ज्यामितीय आकार और टेक्सचर के साथ ही भाव में विशिष्टता दर्शाते हैं। एकाकार को उजागर करती है ये कृति। 'शक्ति' जो तापी भौमिक मजूमदार की कृति है, में स्त्री को शक्ति स्वरूपा दिखाया गया है। देवी को बिल्कुल आदिवासी परिवेश में दर्शा कर सकल विश्व की खेवनहार के रूप में भी दिखाया गया है, जहाँ आँखों में दूरदर्शिता है तो चेहरे पर शालीनता पर शेर और त्रिशूल दुष्टों के संहारक के लिए भी दर्शित है।

समुद्र और जमीन का आपसी मिलन, प्रकृति और मानवता के मिलन का साक्षी बना सा प्रतीत होता है। कृति 'एडवेंट' में वेणुगोपाल वी.जी. ने लहरों को, जमीनी कणों को, बड़े ही सुंदर रंगों में प्रस्तुत किया है। संवाद और स्वागत के दृश्य को संजोने कि आकांक्षी भी दिखा है कलाकार।

'कण-कण में हैं राम' कृति में आयत, त्रिकोण, चतुर्भुज, वृत्त आदि से तैयार बनारस को इस भांति दर्शाया गया है जहाँ कलाकार को ईंट, पत्थर, दीवाल, वृक्ष पत्ती सभी में प्रभु राम के दर्शन होते हैं जिससे दर्शकों को भी जोड़ना चाहते हैं कलाकार आनंद नारायण। कनुप्रिया ने अपने कृति में फटे-पुराने कपड़े, टुकड़ों, धागों, पत्थरों, बोरियों, कागजों के संचयन और संयोजन से कमाल का संतुलन दिखाया गया है। आकृतियों और रंगों को भी अच्छे से संचालित करते हुए एक धागे में पिरो दिया गया हो जैसे। सफेद फ्रेम के बीच बिखरा किंतु एकाग्रता, एकाकार के रूप में एक गांव सा दिखता है इस कृति में।

कलाकार सरोज कुमार मिश्रा, चेतन, अवचेतन, संवेदनशीलता के साथ रंगों, रेखाओं, आकृतियों, पोतों का संवाद किंतु मौन रूप में दर्शाते हैं। बिल्कुल ही गम्भीरता के साथ बतियाती हैं दो आकृतियाँ आपस में जबकि गहरे दबे बीज से भी फूट पड़ता है पौधा पर बिल्कुल ही शांत, शोर-शराबे से दूर। रेखाओं की लयात्मक यात्रा रंगों की यात्रा में तब्दील हो गई हो जैसे। बड़े ही प्यारे रंगों का संयोग बन पड़ा है यहाँ।

प्रगतिशीलता के मोह में मानव किस कदर मानवता को भूलता जा रहा है, पशु-पक्षियों के साथ दुर्भावना का व्यवहार करता जा रहा है, बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करता जा रहा है, इंडस्ट्रीज के चक्कर में भविष्य में बच्चों के सांसो पर ग्रहण लगाता जा रहा है, जैसे मुद्दों को बड़े ही गम्भीर शैली में बनाया गया कलाकार मानस कुमार दास द्वारा। स्कर्मा सोनम तासी के कृति में लद्दाख की सुंदरता, संस्कृति, सर्फेस को गहनता के साथ और नये शैली में प्रस्तुत करने का काम हुआ है। सुंदर रंगों का सधा हुआ संयोजन वो भी लाजवाब टेक्सचर के साथ कहा जा सकता है इसे। आनंद जायसवाल के कृति

'सॉल्विंग द पजल ऑफ सर्कल्स'में बुजुर्ग व्यक्ति की किसी खोज में किए गए प्रयास, उनके आकांक्षा को दर्शाया गया है। कलाकार आनंद जायसवाल हमेशा से कुछ नया करने के प्रयास में रहते हैं और वही यहाँ भी है। कुछ ना होने की स्थिति में भी बहुत कुछ खोज लाना उनकी विशेषता रही है। रंगों, आकृतियों और कठिनाइयों के बीच उलझे ददा को देखकर नाहक ही कलाकृति से जुड़ जाने का मन हो उठता है। नॉस्टॉल्जिक डिस्ट्रक्शन में भास्कर ज्योति गोगोई ने पशु-पक्षियों, गांव-घर, खेत-खलिहान, भित्तियों-झरोखों आदि से होती दूरी और संवाद हीनता को प्रमुखता से दर्शाया है। हम अपने वर्तमान के स्वर्णिम फलक के चाहत में भूत को कितनी निर्ममता के साथ कुचल दिए हैं, को दर्शाया गया है यहाँ। रविकांत झा आकार, निराकार, लय, छंद, स्पंदन आदि के बीच की अनंत यात्रा पर निकले हुए से जान पड़े हैं। सॉफ्ट रंगों की बेहतरीन यात्रा से गुजरता है दर्शक इस कृति में। विजय एम. ढोरे के कृति '(सृजन) चार चित्रों की श्रृंखला' में सांकेतिक, ज्यामितीय बिंबों के माध्यम से नया सृजन और सृजन से पूर्व की बेचैनी, संघर्ष आदि को दर्शाया गया है। जबकि आशीष घोष के कृति में

तीन माध्यमों को एक साथ समायोजित कर समुद्र के पास और दूर के दृश्य को जीवंत किया गया है। श्याम-श्वेत रंगों का अच्छा संयोजन भी दिखी है इस कृति। 'स्कूटर' कृति के माध्यम से अभिषेक शर्मा दर्शकों को दशकों पूर्व के समय काल में लेकर पहुँच जाते हैं, जिसे देखते ही लोगों का इस कृति से जुड़ाव स्वतः हो जाता है। के.सी.एस. प्रसन्नालीनोकट कृति के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं और दर्शकों को सोचने पर विवश करते हैं। प्रदर्शनी में वरिष्ठ कलाकार कृष्ण खन्ना, राम वी. सुतार और इरा चौधरी को भी भारतीय कला में उनके अमूल्य आजीवन योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री, गजेंद्र सिंह शेखावत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर उनके साथ संस्कृति मंत्रालय के सचिव विवेक अग्रवाल, संस्कृति मंत्रालय की अपर सचिव अमिता प्रसाद सरभाई, ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष नंद लाल ठाकुर और ललित कला अकादमी के सचिव राजीव कुमार भी उपस्थित रहे।

चिरापाटला में सड़क बनाने वाली कंपनी कर रही अवैध खनन

बैतूल। चिचोली क्षेत्र के चिरापाटला में सडक़ बनाने वाले हरदा के ठेकेदार की कंपनी, एनजीटी की रोक के बावजूद रेत का अवैध खनन कर न सिर्फ सडक़ बनाने में इसका उपयोग कर रही, बल्कि रेत का स्टॉक भी डम्प कर रही है। इन स्थानीय रेत माफियों के पास इसकी कोई रॉयल्टी भी नहीं है। स्थानीय संवाददाता ने जब वहां के ग्रामीणों से इस संबंध में बात की, तो उन्होंने बताया कि हरदा-इंदौर हाईवे से चिरापाटला में अंदर की ओर बनाई जा रही सीसी रोड पर बल्हौर, निमिया क्षेत्र के नदी नालों से अवैध खनन कर निकाली जा रही रेत का बेजा इस्तेमाल सडक़ बनाने हेतु किया जा रहा है। चिचोली क्षेत्र के बल्हौर, निमिया गांव से होते हुए यह रेत ट्रैक्टर द्वारा चिरापाटला पहुंचाकर इसका इस्तेमाल सडक़ बनाने में किया जा रहा है। इस संबंध में जब जिले के रेत ठेकेदार परम डिस्ट्रीब्यूटर के प्रबंधक से, एनजीटी की रोक के बावजूद हो रहे अवैध खनन का पूछा गया तो उन्होंने बताया कि हमारे द्वारा इन दिनों सिर्फ स्टॉक में रखी हुई रेत को ही बेचा जा रहा है। जिले के चिचोली क्षेत्र के चिरापाटला में और सारणी के चौपना बेल्ट में स्थानीय रेत माफिया द्वारा अवैध खनन कर चोरी से नदी-नालों से रेत निकालकर क्षेत्रीय ट्रैक्टरों के माध्यम से अवैध रूप से यह रेत बेची जा रही है। हमने इस अवैध खनन की शिकायत जिला खनिज अधिकारी एवं स्थानीय पुलिस प्रशासन से भी की है।

इनका कहना है-

इस मामले की शिकायत मेरे पास आई है। आज सारनी क्षेत्र में अवैध उत्खनन पर कार्यवाही में व्यस्त होने के कारण कल चिरापाटला में स्थल निरीक्षण करूंगा और विस्तृत जांच करवाकर उचित कार्यवाही करुगा।

मनीष पालेवार, जिला खनिज अधिकारी बैतूल

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जिले में खुलेंगे 33 बायो इनपुट रिसोर्स सेंटर

बैतूल। जिले में प्राकृतिक खेती के लिए 33 बायो इनपुट रिसोर्स सेंटर (बीआरसी) खोले जाएंगे। यह पहल कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग योजना के तहत की जा रही है। जिले में बनाए गए 50 नेचुरल फार्मिंग क्लस्टर के लिए अब प्रत्येक 3 क्लस्टर पर 2 बीआरसी स्थापित किए जाएंगे। इससे किसान सीधे अपने क्षेत्र में जैविक उर्वरक, गोबर, गोमूत्र और पौधों पर आधारित बीजामृत, घनजीवामृत, जीवामृत एवं निमास्त्र, ब्रम्हास्त्रिव सामग्री प्राप्त कर सकेंगे। कृषि विभाग परियोजना संचालक डॉ. आनंद कुमार बडोनिया ने बताया कि जिले के विकासखंड बैतूल में 4, शाहपुर में 4, चिचोली में 3, घोड़ाडोंगरी में 3, आमला में 3, मुलताई में 3, प्रभात पटटन में 3, आठनेर में 3, भैसदेही में 4 और भीमपुर में 3 सेंटर खोले जाएंगे। इसके लिए स्थानीय कृषि उद्यमी, किसान उत्पाद संगठन, स्वयं सहायता समूह और प्राथमिक सेवा सहकारी समितियों को प्राथमिकता दी जाएगी। बीआरसी में किसानों को गोबर, गोमूत्र और पौधों पर आधारित जैविक सामग्री उपलब्ध होगी। इसके लिए स्थानीय गोशालाओं और समुदाय आधारित संगठनों के साथ साझेदारी भी की जाएगी। यदि क्लस्टर क्षेत्र में कोई संस्था या समूह उपलब्ध नहीं है, तो प्राकृतिक खेती करने वाले कृषि उद्यमी को चयनित किया जाएगा। इसके लिए 22 सितंबर तक आवेदन बुलाए गए है। इसके लिए संबंधित विकासखंड स्तरीय ब्लॉक टेक्नोलॉजी मैनेजर से संपर्क कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते है। इसमें संस्था का पंजीयन, आधार, पैन कार्ड, सदस्यों की सूची और कम से कम दो वर्षों का प्राकृतिक खेती का विस्तृत बिजनेस प्लान देना अनिवार्य है। बिजनेस प्लान में सेंटर का स्थान, खेती की स्थिति, सेवा क्षेत्र का बाजार विश्लेषण, जैव-इनपुट की बिक्री योजना और कच्चे माल की उपलब्धता का विवरण शामिल होगा।

बच्चों को पागल कुत्ते का जूठा पानी पिलाने के मामले में बड़ी कार्यवाही

आमला। महिला एवं बाल विकास अधिकारी निर्मलसिंह ठाकुर ने बीसीघाट की आंगनवाड़ी सहायिका कृष्णी पति कैलाश यादव को पद से पृथक कर दिया है। उनके विरुद्ध ग्राम पंचायत कोठिया के सरपंच एवं ग्रामवासियों के द्वारा शिकायत की थी। जिसमें बताया था कि गत 2 अगस्त को आंगनवाड़ी सहायिका द्वारा पागल कुत्ता का जूठा पानी आंगनवाडी केन्द्र में उपस्थित बच्चों को पिलाया गया एवं आंगनवाडी केन्द्र में भी सहायिका कर्तव्य के प्रति लापरवाही बरती जाती है। जिसके कारण बच्चों के माता पिता का कहना है कि अपने बच्चों को जब तक आंगनवाडी केन्द्र नहीं भेजेंगे, तब तक कि आंगनबाड़ी सहायिका को हटा नहीं दिया जाए। शिकायत के आधार पर पर्यवेक्षक पुष्पा खातरकर द्वारा की गई जांच में आंगनबाड़ी सहायिका का कर्तव्य के प्रति लापरवाही के विरूद्ध नोटिस जारी किया गया था। जिसका जवाब सहायिका द्वारा दिया गया था, जवाब की पुष्टि हेतु शिकायतकर्ताओं को दो सेक्टर पर्यवेक्षक के साथ आंगनवाडी केन्द्र बिसीघाट में उपस्थित होकर, शिकायतकर्ता ग्रामवासियों एवं आंगनवाड़ी सहायिका से शिकायत संबंधी चर्चा कर शिकायत की सत्यता की पुष्टि की गई है। शिकायत के संबंध में उपस्थित ग्रामवासियों के कथन लेकर लेखबद्ध किए गए, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अनीता काजले के भी कथन लिए गए थे, उक्त सभी कथनानुसार आंगनवाडी सहायिका कृष्णी यादव की निरंतर कर्तव्य के प्रति लापरवाही परिलक्षित हुई। इसके अतिरिक्त सेक्टर पर्यवेक्षक द्वारा 24 अगस्त 2025 को आंगनवाड़ी सहायिका कृष्णी यादव के विरुद्ध कर्तव्य के प्रति लापरवाही के कारण कार्यवाही करने हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया एवं 28 अगस्त 2025 को ग्राम पंचायत कोठिया के द्वारा भी उक्त आंगनवाड़ी सहायिका के विरूद्ध कार्यवाही करने हेतु उक्त कार्यालय को प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व आमला के समक्ष उक्त आंगनवाड़ी सहायिका कृष्णी यादव को सेवा से पृथक करने हेतु नस्ती प्रस्तुत कर अनुमोदन प्राप्त किया गया। मप्र शासन, महिला एवं बाल विकास विभाग के निर्देशों के तहत आंगनबाड़ी सहायिका कृष्णी यादव पति कैलाश यादव को तत्काल सेवा से पृथक किया जाता है।

स्पॉट वेरिफिकेशन और जियो टैगिंग में देरी न हो संभागायुक्त

बैतूल/मुलताई। संभागायुक्त कृष्ण गोपाल तिवारी ने सोमवार को कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के साथ जनपद कार्यालय मुलताई का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने यहां योजनाओं के क्रियान्वयन और विकास कार्यों की बारीकी से समीक्षा की। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के प्राप्त लक्ष्य की तुलना में प्रगति की जानकारी ली। जिसमें जनपद सीईओ ने बताया इस वर्ष 1844 आवास के प्राप्त लक्ष्य के विरुद्ध 652 आवास पूर्ण किए जा चुके हैं। 1142 आवास प्रगतिरत है, जिस पर संभागायुक्त तिवारी ने पोर्टल खुलवाकर प्रधानमंत्री आवास के स्टेटस की /जानकारी लीं। संभागायुक्त तिवारी ने आवास निर्माण के लिए हितग्राहियों को स्वीकृत किश्तों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि प्रथम किश्त मिलने के उपरान्त द्वितीय किश्त में देरी। इसी प्रकार तृतीय और चतुर्थ किश्त मिलने में भी लंबा अंतराल न हो।

जिला खाद्य आपूर्ति विभाग ने जारी किए नोटिस संतोषजनक जवाब नहीं तो कटेंगे नाम

6 लाख से अधिक की आमदनी, कंपनी संचालक और जीएसटी भरने वाले भी ले रहे राशन

संजय द्विवेदी

बैतूल। ईकेवाईसी होने के बाद उन लोगों की सूची तैयार की थी, जिनकी 6 लाख रुपए से अधिक की आमदनी है या फिर ये लोग कंपनी संचालक तो कोई जीएसटी भर रहे हैं, लेकिन इनके नाम से भी राशन पर्ची जारी हो रही है। अब इन सभी लोगों को नोटिस जारी किए हैं। इन्हें जबाव देना होगा। संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर इनके नाम राशन पर्ची से हटा दिए जायेगे। दरअसल आयकर और जीएसटी विभाग की संयुक्त जांच रिपोर्ट में सामने आया है कि जिले में हजारों ऐसे लोग बीपीएल और एएवाई कार्डधारी बने बैठे हैं, जिनकी आय लाखों में है या जिनका कारोबार करोड़ों का है। यह लोग गरीबों के हिस्से का राशन ले रहे थे। रिपोर्ट के मुताबिक जिले में करीब 3,657 उपभोक्ता यह राशन ले रहे हैं। बता दे कि पात्र लोगों को ही पात्रता पर्ची से खाद्यान्न मिले, इसके लिए ईकेवाईसी करवाई गई थी। क्योंकि बड़ी संख्या में लोग ऐसे हैं जो अपात्र होते हुए भी राशन ले रहे हैं। इन लोगों को चिन्हित करने उनकी सूची तैयार की गई। इसके लिए अभी शुरू में 3 कैटेगरी तैयार की गई है, जो निर्धारित पात्रता श्रेणी में नहीं आते हैं।

3657 लोगों में यह है शामिल - रिपोर्ट के मुताबिक जिले में करीब 3,657 उपभोक्ता ऐसे है जो राशन ले रहे हैं। इनमें 510 कंपनी डायरेक्टर, हेडमास्टर, सरकारी कर्मचारी और बड़े कारोबारी शामिल हैं। 3,118 परिवार ऐसे हैं जिनकी वार्षिक आय 6 लाख से अधिक है, फिर भी ये बीपीएल कार्डधारक हैं। इतना ही नहीं, 29 परिवार ऐसे हैं जिनका कारोबार 25 लाख से अधिक टर्नओवर का है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि 510 से अधिक कंपनी डायरेक्टर करोड़ों का बिजनेस करने के बावजूद वह प्रतिमाह राशन ले रहे थे। अब इन लोगों को नोटिस जारी किये गये है। नोटिस का संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर इनके नाम काटे जायेगे।

ईकेवायसी नहीं कराने वालों को नहीं मिल रहा खाद्यान्न - जिले में कुल 12,53,127 हितग्राही सदस्य हैं। इनमें से 11,55,269 (92 प्रतिशत) की ई-केवाईसी हो चुकी है, जबकि करीब 60 हजार लोगों की ई-केवाईसी होना शेष है। जिनकी ई-केवायसी नहीं हुई है, उन्हें खाद्यान्न नहीं मिल रहा है। विभाग का कहना है कि जिनकी ई-केवाईसी पूरी हो चुकी है, उनके खाद्यान्न का आवंटन शासन स्तर से सीधे जारी हो रहा है। शेष का सत्यापन पूरा होने के बाद ही पीओएस मशीन पर उनका राशन कार्ड सक्रिय रहेगा। बता दे कि सरकार ने राशन उपभोक्ताओं को ई-केवायसी कराना अनिवार्य किया है। जिनकी ई-केवायसी नहीं है, उनका खाद्यान्न रोक दिया गया है।

3 हजार से अधिक लोगों को जारी किये नोटिस-प्रदेश सरकार को यह सूची आयकर विभाग ने भेजी थी। सरकार ने इसे खाद्य विभाग के पोर्टल पर अपलोड किया है। इसके बाद जिला खाद्य आपूर्ति विभाग ने कार्रवाई तेज कर दी है। फर्जी कार्डधारकों के नाम काटने की प्रक्रिया शुरू हो गई है और अब तक 3,000 से अधिक लोगों को नोटिस जारी किए जा चुके हैं। विभाग का कहना है कि जिन लोगों के खिलाफ जांच में गड़बड़ी पाई गई है, उन पर नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी। हितग्राहियों का जवाब आने के बाद पोर्टल से विलोपन की कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल जिला खाद्य आपूर्ति विभाग ने सभी लोगों के नाम नोटिस जारी कर दिये है और जांच चल रही है।

सिर्फ इन्हें ही राशन पर्ची की पात्रता

जानकारी के अनुसार राशन की नवीन पर्ची के लिए 29 कैटेगरी अंत्योदय अन्न परिवार, बीपीएल परिवार, वन अधिकार पट्टाधारक, भूमिहीन कोटवार, मप्र में निवासरत अनुसूचित और अनुसूचित जनजाति परिवार जो शासकीय सेवारत या आयकर दाता न हो, सनिर्माण कर्मकार मंडल के अंतर्गत आने वाले श्रमिक, बंद पड़ी मिलों के पूर्व नियोजित श्रमिक, बीड़ी श्रमिक, भूमिहीन खेतिहर मजदूर, रिक्शाचालक, ठेलाचालक, फेरी वाले, शहरी घरेलू कामकाजी कर्मी, सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राही, विकलांग, वृद्धाश्रम में रहने वाले, दिव्यांग जन 40 फीसदी से अधिक नि:शक्तता संबंधी, कुली, हम्माल और तुलावटी, बुनकर और शिल्पी, एचआईवी संक्रमित, मछुआरे, व्यावसायिक वाहन चालक, परिचालक, घुमक्कड़, केश शिल्पी, अन्य वंचित वर्ग, कुष्ठ रोग पीड़ितों, ट्रांसजेंडर और कोविड बाल कल्याण योजना शामिल हैं।

इस तरह की हैं तीन कैटेगरी

(1) जिन लोगों की आय 6 लाख से अधिक है उनके नाम भी इस सूची में जारी किए गए है। इनकी संख्या 3,118 है। अभी ये सभी पात्रता पर्ची ले रहे हैं।
(2) कुछ ऐसे लोग हैं जिनकी अपनी कंपनी है। इसके बाद भी इनके नाम पात्रता सूची में शामिल हैं। ऐसे कंपनी डायरेक्टरों की संख्या 510 है।
(3) कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनका व्यवसाय 25 लाख से अधिक का है और वह जीएसटी का भुगतान भी करते हैं। ऐसे लोगों की संख्या 29 है।

इनका कहना -

आयकर विभाग से प्रदेश सरकार को एक सूची भेजी थी। जिनमें अपात्र लोगों द्वारा गरीबों को मिलने वाला निःशुल्क खाद्यान्न लिया जा रहा था। सूची के आधार पर अभी तक 3 हजार से अधिक लोगों को नोटिस जारी किए जा चुके हैं। हितग्राहियों का जवाब आने पर जांच उपरांत पोर्टल से विलोपन की कार्रवाई की जाएगी।
- केके टेकाम, जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी बैतूल

ताप्ती तट जहां तर्पण से मिलता है पितरों को मोक्ष

पंडित गणेश त्रिवेदी वर्षों से कराते है नि:शुल्क तर्पण

बैतूल/मुलताई। पूरब से पश्चिम की ओर बहने वाली देश की सबसे लंबी नदियों में से एक ताप्ती नदी का अपना धार्मिक एवं पौराणिक महत्व रहा है। ताप्ती को आदि गंगा भी कहा जाता है पुराणों में ताप्ती तट पर जप तप एवं पितरों के तर्पण का विशेष महत्व है यही कारण है कि पितृपक्ष के महीने में दूर-दूर से लोग ताप्ती तट पर आकर अपने पितरों का तर्पण करते हैं और मान्यता अनुसार अपने पितरों को मोक्ष दिलाते है। पितृपक्ष पर तर्पण के लिए ताप्ती तट पहुंचने वालों को पंडित गणेश त्रिवेदी वर्षों से निशुल्क तर्पण कराते हैं। निशुल्क तर्पण का प्रारंभ गणेश त्रिवेदी के पिता दुर्गा शंकर त्रिवेदी ने लगभग 35 वर्ष पूर्व किया था जिसके बाद उनके पुत्र गणेश त्रिवेदी यह विधि एवं परंपरा को को आगे बढ़ा रहे हैं। ताप्ती की तरह ही ताप्ती जल में भी अनेक गुण पाए जाते हैं, जो किसी अन्य नदियों में नहीं पाए जाते ताप्ती जल में बाल और हड्डियां तक गल जाती है। इसके वैज्ञानिक कारण हो सकते हैं किंतु लोग इसे ताप्ती की महिमा के रूप में देखते हैं। पितृपक्ष मास में

सूरज की पहली किरण के साथ ही सैकड़ों की संख्या में ताप्ती तट पर तर्पण करते लोग और पंडितों द्वारा मंत्र जाप की ध्वनि एक अलग ही मनोहारी धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण निर्मित कर देती है। पंडित गणेश त्रिवेदी बताते हैं कि सूर्यपुत्री आदि गंगा मां ताप्ती तट पर तर्पण एवं पिंडदान का अपना धार्मिक महत्व है। पुराणों में आता है कि ताप्ती तट पर अनेक ऋषि मुनि एवं देवी देवताओं ने भी अपने पितरों का तर्पण पिंडदान कर मोक्ष प्रदान कराया है। हम लगभग 35 वर्षों से ताप्ती तट पर निशुल्क तर्पण की विधि कराते हैं मुझसे पहले मेरे पिता पंडित दुर्गा शंकर त्रिवेदी ने यह परंपरा प्रारंभ की थी। पितृपक्ष मास में ताप्ती तट पर देश के लिए शहीद होने वाले जवानों, मित्रों, शत्रु सहित पशु ,पक्षी, गाय आदि के लिए भी तर्पण करते हैं। ताकि पित्र तृप्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सके और हमें सुख समृद्धि का आशीष दे। पंडित त्रिवेदी कहते हैं कि मां ताप्ती के इस पावन तट पर प्रतिवर्ष लगभग हजारों लाखों लोग यहां पहुंचते हैं भक्त लोग पहुंचकर अपने माता, पिता ,दादा परदादा सब का नियमित रूप से यहां पर तर्पण करते हैं और पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। भक्तगण अपने माता-पिता और जितने भी पूर्वज जिनका देहांत हो गया है उनका ताप्ती जल से नियमित तर्पण कर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

तर्पण समिति कराकती है निशुल्क तर्पण सामग्री उपलब्ध...प्रतिवर्ष पितृपक्ष मास में बड़ी संख्या में लोग भोपाल, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा एवं जिले के ग्रामीण अंचलों से अपने पितरों के तर्पण के लिए ताप्ती तट पहुंचते हैं। यहां न सिर्फ निशुल्क तर्पण कराया जाता है बल्कि ताप्ती तर्पण समिति यहां आने वालों को तर्पण सामग्री तिल, जौ, चावल, फूल, दूध कुशा आदि भी निशुल्क उपलब्ध कराती है। पंडित गणेश त्रिवेदी कहते हैं कि जजमान को ताप्ती तट मात्र एक तांबे का लोटा लेकर पहुंचना होता है । इस समिति से जुड़े लोगों में रितेश परिहार, विजय शुक्ला, महेश खत्री, हरीश पटेल, रमेश चंद पांडे, ओमप्रकाश मिश्रा ,नीरज अग्रवाल ,राधेश्याम अग्रवाल प्रमुख है। इसके अलावा तर्पण हेतु बाहर से आने वाले लोगों को सामग्री उपलब्ध कराना कुश की अंगूठियां को बनाकर ताप्ती तर्पण करने वालों को उपलब्ध कराने की सेवा सपन बंगाली ,अरुण पंडाग्रे ,कृष्ण राव गोलू पाटेकर आदि लोग देते हैं।

कारगिल चौक से बच्चा जेल चौक तक 7.89 करोड़ की लागत से बनेगी 10 मीटर चौड़ी सड़क

बैतूल। कारगिल चौक से बच्चा जेल चौक तक 7.89 करोड़ की लागत से शीघ्र ही 10 मीटर चौड़ी सडक़ का निर्माण किया जाएगा। सोमवार को राजस्व और नगरपालिका अमले ने सडक़ निर्माण हेतु मार्किंग कार्य किया। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने मौके पर पहुंचकर औचक निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि टीएनसीपी अनुसार स्वीकृत सडक़ की ही मार्किंग की जाए। साथ ही कहा कि जिन मकानों व प्रतिष्ठानों का निर्माण अतिक्रमण की श्रेणी में आता है, उन्हें नोटिस देकर हटाने की कार्यवाही की जाए। मुख्य नगरपालिका अधिकारी सतीश मत्सेनिया ने बताया कि कारगिल चौक से बच्चा जेल चौक तक 10 मीटर चौड़ी सडक़ का निर्माण प्रस्तावित है। मार्किंग कार्य पूर्ण होने के बाद शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

कैट के प्रदेश पदाधिकारियों की बैतूल में बैठक सम्पन्न

बैतूल। विगत दिनों व्यापारियों के सबसे बड़े संगठन कैट के प्रदेश पदाधिकारियों का सम्मेलन बैतूल में सम्पन्न हुआ था। इस ऐतिहासिक सफल आयोजन में राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित प्रदेश के पदाधिकारी शामिल हुए, उन्होंने कैट बैतूल की टीम को व्यवस्थित सफल आयोजन के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा कर बधाई दी। पूरी टीम के प्रति आभार व्यक्त करने हेतु कैट को जिला उद्योग संघ ने बहुउद्देशीय एक गरिमामय कार्यक्रम व सहभोज आयोजित किया। कार्यक्रम अध्यक्षता उद्योग संघ अध्यक्ष ब्रजआशीष पांडे ने की। सम्मेलन में कैट के प्रदेश महामंत्री राजीव खंडेलवाल, संभागीय अध्यक्ष मनजीतसिंह साहनी और जिलाध्यक्ष मनोज भार्गव विशेष रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर उद्योग संघ की ओर से कैट टीम बैतूल का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते कैट प्रदेश महामंत्री राजीव खंडेलवाल ने सम्मेलन में जीएसटी की विस्तृत जानकारी देते कहा कि उद्योग और व्यापार दोनों को साथ लेकर चलना होगा, तभी विकास संभव है। उन्होंने पूर्व में आयोजित कैट के प्रदेश पदाधिकारी सम्मेलन की समीक्षा करते हुए बैतूल कैट टीम की शानदार मेजबानी की प्रशंसा की और प्रदेश के पदाधिकारियों की ओर से कैट टीम बैतूल को बधाई दी। उद्योग संघ अध्यक्ष ब्रज आशीष पांडे ने कहा कि आगामी कुछ महीनों में औद्योगिक गतिविधियां तेजी से बढ़ेंगी और बैतूल के औद्योगिक क्षेत्र का तेजी से विकास होगा। उन्होंने आह्वान किया कि सभी मिलकर बैतूल को औद्योगिक हब के रूप में आगे बढ़ाएं। जिलाध्यक्ष मनोज भार्गव ने कैट संगठन की विस्तार से जानकारी देते कहा कि कैट देशभर के 6 करोड़ व्यापारियों का विशाल संगठन है और बैतूल में भी यह संगठन हर व्यापारी के साथ खड़ा है।

सेवा पखवाड़ा अभियान और स्वरोजगार शिविरों का सफल संचालन किया जाए : कलेक्टर

बैतूल। सेवा पखवाड़ा और स्वरोजगार शिविरों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित कराएं। यह निर्देश कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने सोमवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित समयसीमा की बैठक में सभी संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने बैठक में सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय मामले दुर्गादास उईके के मुख्य आतिथ्य में 17 सितंबर को जेएच कॉलेज ऑडिटोरियम में आयोजित होने वाले कार्यक्रम की तैयारियों की जानकारी लीं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज हुरमाड़े ने बैठक में सेवा पखवाड़ा अभियान कार्ययोजना की विस्तृत जानकारी बैठक में दी। उन्होंने बताया कि सेवा पखवाड़ा शुभारंभ कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में धार में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया जाएगा। साथ ही सिकल सेल एनीमिया की जांच, रक्तदान शिविर इत्यादि कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। यह कार्यक्रम सशक्त नारी, सशक्त परिवार की थीम पर आयोजित किया जाएगा। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की भी विभागवार विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने आवेदकों से चर्चा कर शिकायतों का संतुष्टिपूर्वक समाधान कराने के निर्देश दिए। उन्होंने आदि कर्मयोगी अभियान के क्रियान्वयन की भी जनपदवार जानकारी ली,

उन्होंने सभी जनपद सीईओ को अभियान का गंभीरता से क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने समस्त एसडीएम को भी लंबित राजस्व प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण करने की हिदायत दी। उन्होंने वृद्धावस्था पेंशन योजना और कल्याणी पेंशन योजना के प्रकरणों की समीक्षा कर भीमपुर और भैंसदेही में पेंशन शिविरों का आयोजन करने के सीईओ जनपद और उप संचालक सामाजिक न्याय को निर्देश दिए। उन्होंने बैठक में स्वरोजगार योजना के बैंकवार शिविर के आयोजन की भी समीक्षा कर सभी एसडीएम को अपने क्षेत्र में शिविरों की सतत मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। ताकि समस्त स्वरोजगार मूलक योजनाओं में शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल की जाएं। समग्र ई केवाईसी अभियान की भी समीक्षा शेष लक्ष्य को भी शीघ्र पूर्ण कर शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल करने के निर्देश दिए।बैठक में संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद सहित सभी जिला अधिकारी उपस्थित रहें।

जिला न्यायालय सहित 24 खंडपीठों पर वर्ष की सबसे सफल नेशनल लोक अदालत आयोजित

5221 प्रकरणों का निराकरण किया गया तथा समझौत राशि 11 करोड़ 25 लाख 79 हजार 156 रूपये जमा हुई

सीहोर (निप्र)। सीहोर जिले में जिला एवं तहसील स्तर पर नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया गया। नेशनल लोक अदालत का शुभारंभ प्रधान जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री प्रकाश चंद्र आर्य ने किया। लोक अदालत में 5221 प्रकरणों का निराकरण किया गया एवं समझौता राशि 11 करोड़ 25 लाख 79 हजार 156 रूपये जमा हुई। इस अवसर पर प्रधान जिला न्यायाधीश श्री प्रकाश चंद्र आर्य ने कहा कि लोक अदालत से पक्षकारों के साथ अधिवक्ताओं एवं न्यायिक अधिकारियों को भी परम शांति की अनुभूति होती है क्योंकि इससे एक प्रकरण नहीं बल्कि एक विवाद हमेशा के लिए निराकृत हो जाता है एवं पक्षकारों के बीच आपसी स्नेहपूर्ण सम्बध स्थापित होते है। यही लोक अदालत की सबसे सुंदर बात है। उन्होंने कहा कि हमें हर योजना को उसके मूर्त रूप में लागू कर आमजन को लाभान्वित करना चाहिए। आमजन को सस्ता सरल और सुलभ न्याय दिलाने का लोक अदालत एक प्रभावी स्थान है, जो वर्तमान समय में समाज के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है। उन्होंने न्यायालय परिसर में लगाए गए बैंक, नगर पालिका, विद्युत मंडल आदि के स्टॉलों का निरीक्षण भी किया और लोक अदालत में आए नागरिकों की समस्याएं सुनकर संबंधितों निराकरण के निर्देश दिए। इस अवसर पर प्रधान जिला न्यायाधीश ने घरेलू हिंसा के विषय में तैयार बैनर का अनावरण भी किया गया। उन्होंने 40 घंटे का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके न्यायाधीशगण श्री दीपेन्द्र मालू, श्रीमती उजाला शुक्ला एवं सुश्री आकांक्षा कुमार उचाडिया को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र प्रदान किए। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र भी वितरित किये। इस अवसर उन्होंने राजीनामा करने वाले पक्षकारों को फूल माला एवं पौधे देकर प्रोत्साहित भी किया।

कुल 5221 प्रकरणों का किया गया निराकरण

आज आयोजित नेशनल लोक अदालत में कुल 5221 प्रकरणों का निराकरण किया गया एवं समझौता राशि 11 करोड़ 25 लाख 79 हजार 156 रूपये जमा हुई हैं। नेशनल लोक अदालत में उपभोक्ता फोरम में 934 प्रकरणों का निराकरण आपसी राजीनामा के आधार पर किया गया एवं समझौता राशि 07 करोड़ 39 लाख 39 हजार 520 रुपये जमा कराई गई। इसी प्रकार नेशनल लोक अदालत की खंडपीठ के समक्ष 4287 प्रकरणों का निराकरण हुआ एवं समझौता राशि 03 करोड़ 86 लाख 39 हजार 636 रुपये जमा कराई गई।

पुराने प्रकरणों का हुआ निराकरण

नेशनल लोक अदालत के अवसर पर न्यायाधीश सुश्री शिवानी श्रीवास्तव के न्यायालय में चेक बाउंस के 04 प्रकरण जो 05 वर्ष से अधिक पुराने थे उनका निराकरण किया गया। इसी प्रकार न्यायाधीश श्री दीपेन्द्र मालू के न्यायालय में 05 वर्ष से अधिक पुराने मामले का निराकरण किया गया, यहां एक प्रकरण 14 लाख 20 हजार रुपये राशि के चेक बाउस के सम्बंध में लंबित था जिसका लोक अदालत में निराकरण हुआ इस प्रकार अनेक पुराने प्रकरण लोक अदालत में निराकृत हुये।

चर्चित मामला – अलग रह रहे दंपत्ति खुशी-खुशी घर लौटे

नेशनल लोक अदालत में एक चर्चित मामला देखने को मिला। इस मामले में आवेदक सचिन अपनी पत्नि प्रिया से पारिवारिक विवाद के कारण अलग रहने लगा था, जिस कारण दोनों में विवाद और बढ़ गया था। दोनो की दो बेटियां है। न्यायालय में प्रधान न्यायाधीश कुटुम्ब न्यायालय श्री वैभव मण्डलोई द्वारा दोनों को समझाइश दी गई और इसके बाद दोनों साथ रहने को राजी हुए और एक दूसरे को खुशी-खुशी माला पहनाकर घर लौटे।

पड़ोसियों ने विवाद छोड़ नेशनल लोक अदालत में एक दूसरे को लगाया गले : नेशनल लोक अदालत में मामला सामने आया, जिसमें पक्षकार इमरान अयान और पक्षकार शाहरुख जो एक दूसरे के पड़ोसी थे, इनमे मामूली बात को लेकर विवाद हो गया था, जिसके बाद दोनो ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। यह मामला उभय पक्षों के मध्य क्रॉस केस के रूप में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सीहोर के न्यायालय में लंबित एवं विचाराधीन था। दोनों पक्ष मामूली विवाद के चलते न्यायालय में निरतर पेशिया कर रहे थे। नेशनल लोक अदालत में प्रधान जिला न्यायाधीश श्री आर्य, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह एवं मुख्य न्यायाधीश मजिस्ट्रेट श्रीमती विनीता गुप्ता द्वारा दोनों पक्षों को समझाइश दी गई और दोनों पक्षों ने एक दूसरे को गले लगाकर राजीनामा किया।

यह थे उपस्थित

कार्यक्रम में प्रधान न्यायाधीश कुटुम्ब न्यायालय श्री वैभव मण्डलोई, विशेष न्यायाधीश श्री हेमत जोशी, प्रथम अपर जिला न्यायाधीश श्री संजय गोयल, द्वितीय जिला न्यायाधीश श्री एमके वर्मा, तृतीय जिला न्यायाधीश श्रीमती स्मृतासिंह ठाकुर, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीमती विनीता गुप्ता, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह, न्यायाधीश श्री दीपेन्द्र मालू, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री राधेश्याम यादव, जिला विधिक सहायता श्री जीशान खान, कॉलेजों के शिक्षक एवं छात्र-छात्राए, एनजीओ के प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता, अधिवक्तागण, लीगल एड डिफेंस काउंसिल्स, विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारीगण और पैरालीगल वालेन्टियर्स उपस्थित थे। राजीनामा करने वाले सभी पक्षकारों को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा पौधे भी वितरित किए गए।

विद्यार्थियों के सपनों को रफ्तार दे रही है निशुल्क स्कूटी वितरण योजना

सीहोर जिले की मेधावी छात्रा कीर्ति को मिली सरकार की तरफ से निशुल्क स्कूटी

सीहोर (निप्र)। केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य है कि कोई भी प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा संसाधनों की कमी के कारण शिक्षा के क्षेत्र में पीछे न रहे और अपने सपनों को साकार कर सकें। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा संचालित की जा रही निशुल्क स्कूटी वितरण योजना भी इन्हीं योजनाओं में से एक है।

इस योजना के तहत शासकीय विद्यालयों में कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले एक छात्र और एक छात्रा को सरकार की ओर से निःशुल्क स्कूटी प्रदान की जाती है। यह केवल एक पुरस्कार ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी योजना के अंतर्गत सीहोर जिले के उत्कृष्ट विद्यालय की छात्रा कीर्ति वर्मा को भी निःशुल्क स्कूटी प्रदान की गई है। कीर्ति ने अपने विद्यालय में 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और यह गौरव हासिल किया। छात्रा कीर्ति कहती हैं कि मध्यप्रदेश सरकार की निशुल्क स्कूटी वितरण योजना हमारे जैसे विद्यार्थियों के लिए बहुत प्रेरणादायी है। इस योजना से हमें यह एहसास होता है कि हमारी मेहनत को सरकार भी सम्मान देती है। इस स्कूटी की मदद से मुझे अब उच्च शिक्षा प्राप्त करने में और आसानी होगी। कीर्ति ने कहा कि मेरे लिए यह स्कूटी केवल एक साधन नहीं बल्कि मेरे सपनों की उड़ान है।

मैं अपने शिक्षकों और परिवार का आभार मानती हूँ, जिन्होंने मुझे हमेशा सही मार्गदर्शन दिया। मैं सरकार का विशेष धन्यवाद करती हूँ, जिसने हम विद्यार्थियों के लिए इतनी अच्छी योजना बनाई है। इससे निश्चित ही हम सबको आगे बढ़ने की नई ऊर्जा मिलती है। यह योजना न केवल विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करती है, बल्कि उनकी पढ़ाई को और सुगम भी बनाती है। खासकर ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के लिए यह योजना किसी वरदान से कम नहीं है। इससे विद्यार्थियों को न केवल विद्यालय और कॉलेज तक आने-जाने में सहूलियत मिलती है, बल्कि वे आत्मनिर्भर भी बनते हैं।

संक्षिप्त समाचार

राजस्व व अन्य विषयों पर वीडियो कॉफ्रेन्स के माध्यम से 17 को चर्चा

विदिशा (निप्र)। भोपाल संभागायुक्त द्वारा जारी आदेश का हवाला देते हुए कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बताया कि बुधवार 17 सितंबर को राजस्व और अन्य विषयों पर चर्चा विडियो कांफ्रेंस के माध्यम से सांय 4 बजे से शुरू होगी। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बताया कि व्हीसी चर्चा में राजस्व विषयों की वीडियो कॉफ्रेन्स के साथ जिन विभागों की बिंदुओं पर चर्चा की जायेगी उनमें श्रम विभाग के सचिव द्वारा जारी अर्द्ध शासकीय पत्र तथा नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा विभाग के अपर मुख्य सचिव द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में जिला स्तर पर की कार्यवाही से अवगत होंगे। कलेक्टर श्री गुप्ता ने उपरोक्त विडियो कांफ्रेंस के दौरान एन आई सी व्हीसी कक्ष में जिला श्रम पदाधिकारी तथा जिला अक्षय ऊर्जा अधिकारी तथा आदिम जाति कल्याण विभाग के अधिकारी को उपस्थित रहने के निर्देश दिए हैं।

परिवहन विभाग द्वारा सागर रोड तथा बस स्टैंड पर की गई कार्रवाई

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा यात्री वाहनों तथा स्कूली वाहनों के विरुद्ध चेकिंग अभियान चलाए जाने के लिए जारी किए गए निर्देशों के अनुपालन में आज शनिवार को जिला परिवहन अधिकारी श्री गिरजेश वर्मा द्वारा सागर रोड तथा बस स्टैंड विदिशा में वाहनों की आकस्मिक जांच कार्यवाही की गई। निरीक्षण दौरान 20 वाहन नियम विरुद्ध चलते पाए जाने के कारण उनके विरुद्ध परिवहन नियमो के तहत चालानी कार्यवाही की जाकर 15 वाहनों से शमन शुल्क 86 हजार 500 रुपये वसूल किये गए है तथा शेष 05 वाहन प्रकरण निराकरण की प्रत्याशा में जप्त कर जिला परिवहन कार्यालय परिसर में सुरक्षार्थ रखे गए। उक्त कार्रवाई के दौरान विशेष रूप से यात्री वाहनों, स्कूल बसों तथा स्कूल के बच्चों का परिवहन करने वाले ऑटो रिक्शा की जांच की गई।

पशुपालन एवं डेयरी विभाग के संचालक ने जायजा लिया

विदिशा (निप्र)। पशुपालन एवं डेयरी विभाग के संचालक डाक्टर पी एस पटेल ने आज विदिशा प्रवास के दौरान विभागीय संस्थाओं एवं गौशालाओं का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पॉली क्लीनिक विदिशा, कृत्रिम गर्भाधान केंद्र विदिशा, पशु रोग अन्वेषण प्रयोगशाला, जिला कार्यालय, पशु औषधालय कुआं खेड़ी, पशु चिकित्सालय गुलाबगंज, श्री कृष्ण गौशाला एरन, राष्ट्रीय पशुधन मिशन अंतर्गत चारा ब्लॉक इकाई हथियाखेड़ा, बकरी प्रजनन इकाई, सेमी ई.सी. ब्रायलर इकाई तथा कनक बिहारी गौशाला गमाखर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान संचालक ने विभागीय योजनाओं के प्रचार-प्रसार पर बल दिया तथा संबंधित संस्थाओं के सुचारू संचालन एवं रखरखाव के निर्देश दिए। साथ ही गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने, मैत्री कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने और कृत्रिम गर्भाधान के निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। इस प्रवास से विभागीय कर्मचारियों एवं पशुपालकों में नई ऊर्जा का संचार हुआ तथा विभाग की योजनाओं को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने की दिशा में सकारात्मक कदम उठाए जाने का विश्वास व्यक्त किया गया।

316 घरों में किया डेंगू लार्वा सर्वे 11 घरों में लार्वा मिला

विदिशा (निप्र)। जिला मलेरिया अधिकारी एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम के द्वारा विदिशा शहरी क्षेत्र के बंटी नगर, बाल विहार एवं मुखर्जी नगर में डेंगू लार्वा सर्वे किया गया। 11 घरों में डेंगू का लार्वा पाया गया जिसे कीट नाशक दवा के द्वारा नष्ट कराया गया टीम के द्वारा डेंगू के लार्वा को नष्ट करने वाली गम्बुजिया मछली छोटे पानी के जलस्त्रोतों में डाली गई एवं लोगों को डेंगू से बचाव की आवश्यक जानकारी दी गई जनसमुदाय से अपील है की वह अपने घर के सभी पानी के कंटेनर, कूलर, फ्रिज ,गमले, टंकिया, टायर को प्रति सप्ताह जांच ले की एडीज मच्छर के लार्वा तो नही पनप रहे, व खाली कर सफाई कर दे। पानी के बड़े कंटेनर जिनकी सफाई व ढांकना संभव न हो तो उनमें मीठा तेल प्रति सप्ताह डालें। मच्छरों के काटने से स्वयं बचाव करे, पूरे शरीर ढकने वाले कपड़े पहने, दिन के समय बच्चों व वृद्धों को मच्छरदानी के अंदर सोने की सलाह दी जावे, मॉस्किटो कॉइल का उपयोग करे, शाम के समय नीम पत्तियों का धुआं करे। तेज बुखार, आंखों के पीछे दर्द, शरीर पर चकत्ते, मांसपेशियों में दर्द, जोड़ो में दर्द, नाक व मसूड़ों से रक्तस्राव होने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क कर डेंगू की जांच जिला चिकित्सालय विदिशाध्अटल बिहारी वाजपेयी मेडीकल कालेज में डेंगू एलाइजा टेस्ट निःशुल्क कराए। इस प्रकार जिले में डेंगू के संचरण के प्रसार को समाप्त, कम करने में सहयोग करें।

प्रदेश में 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक मनाया जायेगा 'सेवा पखवाड़ा'

सेवा पखवाड़ा के तहत जिलेभर में आयोजित की जाएंगी अनेक गतिविधियां

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने प्रदेश में 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चलने वाले सेवा पखवाड़ा में प्रदेश में अनेक गतिविधियाँ आयोजित किये जाने के संबंध में विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित कर सभी जिलों के कलेक्टर्स एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वीसी के पश्चात कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने सभी संबंधित अधिकारियों को जिले में सेवा पखवाड़ा के तहत गतिविधियां आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर को सेवा पखवाड़ा के साथ ही राष्ट्रीय पोषण माह एवं स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार अभियान का भी शुभारंभ होगा। उन्होंने कहा कि नगरीय विकास और पंचायत एवं ग्रामीण विकास सेवा पखवाड़ा के तहत आयोजित स्वच्छता कार्यक्रमों से जनता की सहभागिता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग यह प्रयास करें कि इन अभियानों के तहत आयोजित की जाने वाली गतिविधियों में जिला अव्वल स्थान पर रहे। अभियान के शुभारंभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री के कार्यक्रम

का लाइव प्रसारण किया जाएगा। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत जिले के सभी ग्रामीण क्षेत्रों में गतिविधियां संचालित की जाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक जिले के निर्धारित स्वास्थ्य केन्द्रो पर क्रमानुसार रक्तदान शिविरों एवं स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जाए। सभी नगरीय निकायों तथा ग्राम पंचायतों में 17 सितंबर से 02 अक्टूबर तक स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की जाएं और नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि जिले में एक पेड़ मां के नाम और एक बगिया मां के नाम अभियानों के तहत पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। अभियान के तहत सभी नगरीय निकायों एवं बड़ी ग्राम पंचायतो में नमो पार्क, नमो वन, नमो उपवन विकसित किए जाएं। जिले में विद्यालय स्तर एवं जिले स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि 27 एवं 28 सितम्बर को सामाजिक न्याय विभाग द्वारा दिव्यांगजनों के लिए जिले स्तर पर विशेष शिविर लगाकर उपकरणों का वितरण सुनिश्चित किया जाए। 02 अक्टूबर को आमजन में खादी बस्तुओं एवं वस्त्रों, स्थानीय उत्पादों और हस्तशिल्प के क्रय को प्रोत्साहन किया जाये। इसके लिए महिला स्व-सहायता समूहो, स्थानीय कारीगरों द्वारा निर्मित उत्पादों की प्रदर्शनियां लगाई जाएं। इसके साथ ही विकसित भारत थीम पर जिले के समस्त स्कूल कॉलेजों में चित्रकला, वाद-विवाद, निबंध प्रतियोगिता एवं संगोष्ठी आयोजित की जाएं।

हब फॉर एंपावरमेंट ऑफ वूमेन अंतर्गत परियोजना स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के मार्गदर्शन में हब फॉर एंपावरमेंट ऑफ वूमेन अंतर्गत महिला बाल विकास परियोजना लटेरी में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। उपरोक्त कडी के तहत लटेरी परियोजना क्षेत्र में आयोजित हुए कार्यक्रम की जानकारी देते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढा ने बताया कि कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

लटेरी परियोजना अधिकारी श्रीमती प्रतिभा सिंह ने कार्यक्रम के उद्देश्य एवं महिलाओं के प्रमुख अधिकारों की जानकारी सांझा की। विभाग के मुकेश ताम्रकार द्वारा घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, दहेज प्रतिषेध अधिनियम, साइबर सुरक्षा कार्यस्थल पर महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न अधिनियम एवं वन स्टाफ सेंटर से महिलाओं को दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी देकर जागरूक किया गया। कालोदिया तिर्की पर्यवेक्षक द्वारा केंद्र एवं राज्य स्तर पर संचालित विभिन्न प्रकार की हेल्पलाइन की जानकारी दी गई। गुलाब कुशवाहा द्वारा बाल विवाह रोकथाम पोक्सो एक्ट की जानकारी दी गई ।

भगवती पंथी पर्यवेक्षक द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ और बालिका शिक्षा के बारे में विचार व्यक्त किए गए। महिला बाल विकास विभाग विदिशा से राजीव कौल द्वारा मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना की जानकारी देकर महिलाओं को जागरूक किया गया। कार्यक्रम के अंत में कोलोदिया तिर्की पर्यवेक्षक द्वारा आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

कार्यक्रम में महिलाओं को घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम दहेज उत्पीड़न अधिनियम साइबर सुरक्षा से किया गया जागरूक। विभिन्न प्रकार की हेल्पलाइन उनकी उपयोगिता एवं महत्व की दी गई जानकारी पोक्सो एक्ट बाल संरक्षण एवं बाल विवाह रोकथाम की जानकारी देकर किया गया जागरूक।

गंज बासौदा में 'मिशन शक्ति' अंतर्गत हब फॉर एम्पॉवरमेंट ऑफ वीमेन कार्यक्रम आयोजित

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन मार्गदर्शन में आज लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, गंज बासौदा में हब फॉर एम्पॉवरमेंट ऑफ वीमेन अंतर्गत एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्रीमती विनीता लोढ़ा ने बताया कि महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में आयोजित इस कार्यक्रम में महिलाओं एवं बच्चों को कानूनी अधिकारों की जानकारी प्रदान की गई। मुख्य वक्ता के रूप में उच्च न्यायालय जबलपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री संकल्प सोनी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पॉक्सो एक्ट से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर गंज बासौदा की पर्यवेक्षक श्रीमती स्वर्णिमा सोनी ने पॉक्सो एक्ट से संबंधित कानूनी कार्यवाही को समझाया तथा छात्राओं के प्रश्नों के उत्तर दिए।कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. रजित राम द्विवेदी, उपप्राचार्य डॉ. पीयूष दुबे, विधि विभाग की प्राध्यापक डॉ. निधि शर्मा, कंप्यूटर विभागाध्यक्ष प्रो. वेदप्रकाश स्वर्णकार, प्रो. गौरव नामदेव सहित सभी प्राध्यापक एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन पर्यवेक्षक श्रीमती स्वर्णिमा सोनी ने किया, जबकि ऑनलाइन कॉन्फ्रेंसिंग की तकनीकी व्यवस्था कंप्यूटर विभाग के प्रो. गौरव नामदेव द्वारा की गई। कार्यक्रम के अंत में प्रो. वेदप्रकाश स्वर्णकार ने सभी का आभार व्यक्त किया।

समाज सुधार की प्रेरणादायी मिसाल : अम्बानगर का गौ आश्रय केंद्र

विदिशा (निप्र)। समाज में जब समस्याएँ विकराल रूप धारण कर लेती हैं, तब उनके समाधान के लिए केवल योजनाएँ नहीं, बल्कि सामूहिक संकल्प और जनसहभागिता की आवश्यकता होती है। ऐसी ही प्रेरणादायी मिसाल बनी है गंज बासौदा के अम्बानगर चैराहे पर निराश्रित गौवंश की समस्या का समाधान। कुछ समय पहले तक यह चैराहा प्रतिदिन 300 से 400 गौवंश के जमावड़े के कारण अव्यवस्था का प्रतीक बन गया था।

आवागमन प्रभावित होता था, दुर्घटनाएँ बढ़ रही थीं और किसानों की मेहनत से उपजी फसलें भी बर्बाद हो रही थीं। यह समस्या केवल यातायात की नहीं, बल्कि सामाजिक असंतुलन और जनहित की थी। इसी समय कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के नेतृत्व में समाधान की खोज शुरू हुई। किसानों, व्यापारियों और गौसेवकों से संवाद कर यह निर्णय लिया गया कि गौवंश के लिए स्थायी आश्रय स्थल तैयार किया जाए। विशेष बात यह रही कि इसके लिए न तो शासकीय राशि का इंतजार किया गया और न ही किसी बड़े अनुदान पर निर्भरता बनी। शासकीय भूमि चिन्हांकित की

गई और समाज के लोगों ने स्वेच्छा से धन, श्रम और सहयोग प्रदान किया। धीरे-धीरे यह प्रयास एक कारवाँ बन गया। कोई श्रमदान करने आया, तो किसी ने आर्थिक सहयोग दिया।अल्प अवधि में यह सपना साकार हो गया, जिसमें गौवंश को एक सुरक्षित और व्यवस्थित स्थान मिल गया। आज वही अम्बानगर चैराहा, जो कभी अव्यवस्था और परेशानी का प्रतीक था, अब समाज सुधार और जनसहयोग की प्रेरणादायी कहानी कहता है। गौ आश्रय केंद्र केवल गौवंश की सुरक्षा का स्थान नहीं, बल्कि यह सामाजिक एकता, मानवीय संवेदना और प्रशासनिक दृढ़ता का प्रतीक है। भविष्य में इसे और अधिक सुसज्जित व समृद्ध बनाने की योजना है, जिससे यह पूरे क्षेत्र के लिए आदर्श बन कर प्रदेश में अव्वल हो सकें। यह असंभव सा दिखने वाला कार्य, संभव हुआ केवल इसलिए क्योंकि समाज और प्रशासन ने मिलकर संकल्प लिया। कलेक्टर अंशुल गुप्ता के अथक प्रयासों और आम जन की निस्वार्थ भागीदारी ने सिद्ध कर दिया कि यदि उद्देश्य पवित्र हो और प्रयास सच्चे हों, तो कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती।

एमपी में अगले सप्ताह से मानसून की वापसी

इंदौर समेत 13 जिलों में आज गिरेगा पानी; 2 दिन भारी बारिश का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। राजस्थान से मानसून की वापसी होने लगी है। यह सामान्य तारीख से 3 दिन पहले से लौटने लगा है। ऐसे में मध्यप्रदेश से भी अगले सप्ताह से मानसून की वापसी होने की संभावना है। इससे पहले तेज बारिश का अलर्ट है। भोपाल में सुबह से धूप निकली है। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि लो प्रेशर एरिया की एक्टिविटी की वजह से मध्यप्रदेश में बारिश का दौर चल रहा है। अगले 2 दिन भी तेज बारिश हो सकती है। सोमवार को इंदौर, धार, बड़वानी, खरगोन, देवास, खंडवा, बुरहानपुर, हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा और सिवनी में भारी बारिश की चेतावनी दी गई है। ग्वालियर-चंबल संभाग में कहीं-कहीं हल्की बारिश हो सकती है।

भोपाल समेत कई जिलों में तेज बारिश हुई

रविवार को दोपहर में भोपाल में करीब एक घंटा तेज बारिश हुई। जबलपुर, बैतूल, पचमढ़ी, राजगढ़ में भी बारिश का दौर चला। नर्मदापुरम के इटारसी में भी तेज पानी गिरा। खरगोन, खंडवा, डिंडौरी, मंडला, शहडोल, अनूपपुर, नर्मदापुरम, सागर, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, रीवा, सतना, मैहर, पन्ना, बुरहानपुर, बालाघाट, सिवनी, पांढुर्णा, जबलपुर, कटनी, दमोह समेत कई जिलों में हल्की बारिश हुई।

एमपी में कोटे से ज्यादा पानी गिरा

मध्यप्रदेश में 16 जून को मानसून ने आमद दी थी। तब से अब तक औसत 42 इंच बारिश हो चुकी है। अब तक 34.9 इंच पानी गिरना था। इस हिसाब से 7.1 इंच पानी ज्यादा गिर चुका है। प्रदेश की सामान्य बारिश औसत 37 इंच है। यह कोटा पिछले सप्ताह ही पूरा हो गया है।

सिंहस्थ-2028 के विकास कार्यों के लिए सभी का मिल रहा है समर्थनः मुख्यमंत्री डॉ. यादव

● राज्य सरकार किसानों सहित सभी से संवाद करते हुए लैंड पूलिंग और विकास कार्यों के मार्ग पर है अग्रसर ● हम किसी को नाराज नहीं करना चाहते, राज्य सरकार सभी को साथ लेकर चलने के लिये प्रतिबद्ध ● किसान हित को सर्वोपरि रखते हुये सबकी सहमति के आधार पर होगा अधोसंरचना विकास

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सिंहस्थः 2028 के विकास कार्यों के लिए हमें सभी का समर्थन मिल रहा है। विकास के क्रम को बनाए रखना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। सबके हितों का ध्यान रखते हुए और सभी से संवाद करते हुए राज्य सरकार लैंड पूलिंग सहित सभी प्रकार के विकास कार्यों के मार्ग पर अग्रसर हो रही है। प्रयागराज महाकुंभ के ऐतिहासिक आयोजन में करोड़ों लोगों के आगमन, व्यवस्था और उनके सुरक्षा प्रबंधन के दृष्टिगत केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने स्थायी संरचनाओं के विकास पर बल दिया, इससे क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन को भी प्रोत्साहन मिला। उज्जैन में सिंहस्थ-2028 के लिए स्थायी निर्माण के संबंध में किसानों से संवाद जारी है, हम किसी को नाराज नहीं करना चाहते, राज्य सरकार सभी को साथ लेकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है। विकास का क्रम निरंतर जारी रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह विचार कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में मीडिया से चर्चा में व्यक्त किए।

सिंहस्थ का आयोजन प्रदेश के लिए गौरव का विषय- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इतिहास में अब तक के सबसे बड़े सिंहस्थ मेले का आयोजन उज्जैन में वर्ष-2028 में होने जा रहा है। वर्तमान में उज्जैन की अर्थव्यवस्था में महाकाल लोक बनने से भारी वृद्धि हुई है। सिंहस्थ के आयोजन से उज्जैन का आध्यात्मिक नगरी के रूप में विकास होने से पर्यटन को और बढ़ावा मिलेगा। उज्जैन सिंहस्थ में 30 करोड़ श्रद्धालुओं के सम्मिलित होने की आशा है। सिंहस्थ आयोजन का गौरवशाली इतिहास रहा है, राज्य शासन वर्ष 2028 के सिंहस्थ का आयोजन आस्था, गरिमा और भव्यता के साथ करने के लिये कृत संकल्पित है। यह आयोजन उज्जैन सहित समूचे प्रदेश के लिये अत्यंत गौरव का विषय है।

सिंहस्थ आयोजन में, स्थानीय किसान बंधुओं का सदैव मिला सहयोग

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह सुनिश्चित करना राज्य शासन का कर्तव्य है कि हज़ारों साधु-संतों और करोड़ों श्रद्धालुओं को सिंहस्थ के दौरान उच्च स्तरीय सुविधाएं मिलें और उन्हें कोई परेशानी न हो।

पिछले अनुभवों के आधार पर इस प्रकार की अधोसंरचना बनानी आवश्यक है, जिससे वर्षा-आंधी की स्थिति में भी मेले में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न हो। भव्य और विशाल आयोजन में सुरक्षा प्रबंध सुनिश्चित करते हुए संपूर्ण व्यवस्था बनाए रखना शासन का दायित्व है। इस वृहद आयोजन के लिये हज़ारों एकड़ भूमि की आवश्यकता होती है। सिंहस्थ के आयोजन में, स्थानीय किसान बंधु शासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करते आये हैं।

पीएम मोदी के दौरे से एक दिन पहले शरारत

बदनावर-भैंसोला मार्ग पर पीएम-सीएम के 80 फ्लेक्स क्षतिग्रस्त, पुलिस जांच में जुटी

बदनावर (नप्र)। बदनावर के भैंसोला में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगामी दौरा प्रस्तावित है। इसके पहले रविवार रात कुछ लोगों ने यहां पर पीएम और सीएम के पोस्टर फाड़ने का मामला सामने आया है है। पीएम मोदी 17 सितंबर को यहां प्रधानमंत्री मेगा मित्र टेक्सटाइल पार्क का भूमि पूजन करने वाले हैं। रविवार रात को अज्ञात लोगों ने बदनावर-भैंसोला मार्ग पर तोड़फोड़ की। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री मोहन यादव के फोटो वाले 80 से अधिक पोस्टर को नुकसान पहुंचाया।

जिलाध्यक्ष बोले- सोची समझी साजिश

भाजपा जिलाध्यक्ष महंत नीलेश भारती ने इसे एक सोची-समझी साजिश बताया है। उनका कहना है कि कुछ असामाजिक तत्व आदिवासी क्षेत्र के विकास में बाधा डालना चाहते हैं। भारती ने प्रशासन से दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। पुलिस टीआई अमितसिंह कुशवाह ने बताया कि दोषियों की पहचान के लिए एक विशेष टीम गठित की गई है। पुलिस जल्द ही आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करेगी और उन्हें पकड़ेगी।

तीर्थ दर्शन योजना में विधायक पत्नी, बीजेपी नेता के नाम

● राजगढ़ में कांग्रेस बोली- शायद यही सबसे गरीब, विधायक का जवाब- मुझे जानकारी नहीं

राजगढ़ (नप्र)। राजगढ़ में तीर्थ दर्शन योजना के हितग्राहियों में विधायक हजारीलाल दांगी की दो पत्नियों और बीजेपी पदाधिकारी इंद्रा मूंदड़ा के नाम भी शामिल हैं। ये आरोप कांग्रेस के जिला अध्यक्ष और पूर्व ऊर्जा मंत्री प्रियव्रत सिंह ने लगाए हैं। प्रियव्रत सिंह ने कहा- यह योजना गरीबों के लिए बनाई गई थी, लेकिन सूची में भाजपा नेताओं और उनकी पत्नियों के नाम शामिल किए गए। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा- राजगढ़ जिले से चयनित सूची में गरीब जनता की जगह बीजेपी नेताओं और उनकी पत्नियों के नाम जोड़े गए हैं। प्रशासन की निगाह में

शायद यही लोग सबसे गरीब हैं। उधर, विधायक दांगी ने कहा- यह आरोप गलत है। मैंने कोई आवेदन नहीं दिया है। जारी लिस्ट के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। आयकरदाता का नाम योजना में आना नियमों का उल्लंघन प्रियव्रत सिंह ने शनिवार को माचलपुर में कांग्रेस की बैठक के दौरान कहा- योजना के नियमों के अनुसार, आयकरदाता का नाम इस लिस्ट में नहीं होना चाहिए। हो सकता है कि सरदार बाई आयकरदाता न हों, लेकिन ज्योत्सना जी पूर्व शासकीय सेवक रही हैं। यदि उनकी पेंशन 12 लाख से कम हो तो वे आयकरदाता श्रेणी में नहीं आतीं। लेकिन भाजपा पदाधिकारी इंद्रा मूंदड़ा का नाम सूची में होना हैरानी की बात है। उन्होंने कहा- विधायक स्वयं आयकरदाता हैं, ऐसे में उनकी पत्नी का नाम योजना में आना सही है या नहीं? क्या विधायक जी का जमीर गवाह देता है कि गरीबों की योजना में अपनी पत्नी को शामिल कराएंगे?

कामाख्या देवी दर्शन के लिए निकली है ट्रेन- दरअसल, मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत सोमवार को राजगढ़ से असम के कामाख्या देवी मंदिर के लिए विशेष ट्रेन निकली है। इस ट्रेन के यात्रियों की लिस्ट में ज्योत्सना दांगी और सरदार बाई दांगी के नाम भी लिखे हैं। ये दोनों खिलचीपुर से भाजपा विधायक हजारीलाल दांगी की पत्नियां हैं। वहीं, इंद्रा मूंदड़ा बीजेपी की जिला उपाध्यक्ष रही हैं।

विधायकः मैंने कोई आवेदन नहीं दिया

मीडिया ने इस बारे में खिलचीपुर विधायक हजारी लाल दांगी से बात की। उन्होंने कहा- यह आरोप गलत है। हमारे घर पर पितृ भागवत चल रही है। सुबह 9:30 बजे से मैं और मेरी पत्नी पितरों की पूजन में सम्मिलित होते हैं। 4-5 पंडित हमारे यहां भागवत कर रहे हैं। पाठ पूरे होने के बाद मेरी पत्नी मेरे साथ पितरों को छोड़ने गयाजी जाएंगी। हमारे यहां से कोई भी तीर्थ दर्शन योजना में नहीं जा रहा है।

इंदौर में ट्रक ने राहगीरों को कुचला, 2 की मौत

ट्रक में लग गई थी आग प्रत्यक्षदर्शी का दावा- 5 से 6 लोगों की जान गई

भोपाल/इंदौर। इंदौर में सोमवार शाम को एक बड़ा सड़क हादसा हो गया। एक तेज रफ्तार ट्रक ने कई लोगों को टक्कर मार दी। हादसा शहर के एयरपोर्ट रोड स्थित शिक्षक नगर में हुआ है। एसीपी अमित सिंह के अनुसार, इस हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई है। जबकि 2 लोग घायल हैं। वहीं प्रत्यक्षदर्शियों का दावा है कि 5 से 6 लोगों की मौत हुई है। इधर, हादसे के दौरान ट्रक में भी आग लग गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि ट्रक में एक बाइक फंस गई थी। ट्रक लगातार बाइक को रगड़ते हुए चल रहा था, जिससे उसमें ब्लास्ट हो गया और ट्रक में आग लग गई। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन के साथ ही एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और रेस्क्यू कार्य शुरू कर दिया था।

इंदौर के सांदीपनि मालव कन्या विद्यालय को मिला एक्सीलेंस स्कूल अवॉर्ड

फ्यूचर रेडी स्किल श्रेणी प्रतियोगिता में शामिल हुआ था विद्यालय

भोपाल (नप्र)। सांदीपनि मालव कन्या विद्यालय इंदौर ने फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) का एक्सीलेंस राष्ट्रीय स्तर का स्कूल अवार्ड जीता है। अलायंस फॉर री-इमेजिनिंग स्कूल एजुकेशन अवार्ड (अराइज) फिक्की का प्रतिष्ठित अवार्ड है।

विद्यालय को अवार्ड बच्चों में अकादमिक विषयों से आगे बढ़कर भविष्य के लिये स्किल्स डेव्हलपमेंट के क्षेत्र में नवाचार किये जाने केलिये दिया गया है। विद्यालय के बच्चों को कम्प्यूटर में कोडिंग सिखाई जा रही है। इसी के साथ कम्युनिकेशन और क्रिएटिव की नई तकनीक सिखाई जा रही है। सरकारी स्कूल के बच्चों में स्किल डेवलप कर भविष्य के लिये तैयार किया जा रहा है। नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में हुए कार्यक्रम में अनेक शिक्षाविद् के साथ हाल ही में भारत से स्पेस स्टेशन पर गये ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला भी मौजूद थे।

प्रदेश के लिये गौरव की बात है कि देश के एक हजार स्कूलों में इंदौर के सांदीपनि विद्यालय ने अपने नवाचार कार्यक्रम के जरिये यह पुरस्कार जीता है। पुरस्कार प्राचार्य श्री रामकृष्ण कोरी और उनकी टीम ने प्राप्त किया। प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में पीपल फाउंडेशन की मदद से बच्चों में कम्प्यूटर में दक्षता के लिये यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है। ज्यूरी सदस्यों में केन्द्र सरकार की पूर्व शिक्षा सचिव सुश्री अनीता करवाल और नेशनल काउंसिल ऑफ टीचर एजुकेशन के चेयर पर्सन प्रो. पंकज अरोरा भी शामिल थे।

अलीराजपुर जिले का नाम बदला अब लिखा जाएगा 'आलीराजपुर'

केंद्र सरकार ने एनओसी जारी की, यह रहा इसका कारण

आलीराजपुर। प्रदेश सरकार ने अलीराजपुर जिले का नाम बदलकर अब 'आलीराजपुर' कर दिया है। केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय ने 21 अगस्त 2025 को इस नाम के बदलाव को अपनी औपचारिक स्वीकृति दी थी। अब प्रदेश सरकार ने 15 सितंबर को इस आशय का नोटिफिकेशन जारी होने के बाद जिले का नाम 'आलीराजपुर' होगा।

जिला कलेक्टर अभय बेड़ेकर के मुताबिक स्थानीय लोगों की मांग पर प्रदेश सरकार को इस संबंध में प्रस्ताव भेजा गया था। इसका कारण भी बताया गया। सरकार ने इस कारण को सही मानते हुए केंद्र सरकार को एनओसी के लिए प्रस्ताव आगे भेजा, जिस पर केंद्र की तरफ से एनओसी दी गई। प्रदेश सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग ने जिले के नाम आलीराजपुर होने संबंधी नोटिफिकेशन जारी करने प्रक्रिया को आगे बढ़ा दिया था। सोमवार को नोटिफिकेशन जारी होने के बाद अब जिले का नया नाम 'आलीराजपुर' होगा। लंबे समय से जिले के नाम की पुरानी वर्तनी 'अलीराजपुर' विवाद और चर्चा का विषय रही थी। इसे बदलने के लिए स्थानीय लोग मांग कर रहे थे।

इतिहासकारों के अनुसार यहां 'अली' और 'राजपुर' नाम के दो गांव है। ये दोनों गांव 400 साल पहले छोटी-छोटी रियासतें थी। माना जाता है कि 15वीं सदी में यहां भील राजा आलिया भील का शासन रहा। आलिया के नाम पर ही

इस इलाके की पहचान बनी। यहां बाद में राठौड़ शासकों का भी प्रभाव रहा और यह क्षेत्र राठौड़ राजाओं का गढ़ कहलाया। कहा जाता है कि दोनों शासकों के प्रभाव से यह दो रियासतें बनी थी, जिनके नाम पर अब दो गांव रह गए। स्थानीय लोगों का कहना है कि इन दोनों रियासतों को एक मिलाकर 'आलीराजपुर' कहा जाता था। समय के साथ उच्चारण और वर्तनी में बदलाव आया और यह अलीराजपुर कहलाने लगा। स्थानीय समाज लंबे समय से इसकी मूल पहचान और उच्चारण 'आलीराजपुर' को ही आधिकारिक मान्यता देने की मांग कर रहा था।

जिला 2008 में बना - झाबुआ जिले से अलग कर अलीराजपुर को 17 मई 2008 को नया जिला बनाया गया था। इसका नाम तत्कालीन मुख्यालय अलीराजपुर पर रखा गया।

बहू ने दो जेठ पर गैंगरेप का आरोप लगाया

● ग्वालियर पुलिस से शिकायत की ● बार-बार रेप किया, कहते थे, इससे तुम्हारा पति ठीक हो जाएगा

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में एक 25 साल की महिला ने अपने दो जेठ पर बार-बार गैंगरेप करने का आरोप लगाया है। पीड़िता ने बताया कि उसके पति की तबीयत खराब रहती है। वह इलाज के लिए 20-20 दिन घर से बाहर हुसैन टेकरी शरीफ जावरा (रतलाम) जाते हैं। ऐसे में जेठ दुष्कर्म करते थे। विरोध करने पर 10 माह की बेटी की हत्या की धमकी देते। आरोपी कहते थे कि किसी ने बताया है कि ऐसा करने से तुम्हारा पति जल्दी ठीक हो जाएगा। जब महिला ने अपने पति को बताया तो उसने कहा कि मैं ठीक हो रहा हूं तो तुम्हें क्या दिक्कत है?

घटना डबरा के जंगीपुरा क्षेत्र में 10 जनवरी से 25 मई 2025 के बीच की है। रविवार को महिला थाने पहुंची और दोनों जेठ के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस पूछताछ में दोनों ने आरोपों को झूठा बताया।

डबरा के युवक से मई 2025 में हुआ था निकाह- डबरा में रहने वाली पीड़िता ने महिला थाना में शिकायत की है। पीड़िता ने बताया कि उसका निकाह 5 मई 2023 को डबरा निवासी एक युवक के साथ हुआ था। निकाह के एक साल तक मैं अपनी ससुराल में ठीक से रही। उसके बाद मेरे पति का स्वास्थ खराब होने की वजह से वह जावरा (रतलाम) चले गए।

पति के बाहर जाते ही दोनों जेठ कमरे में आए- पति जावरा गए थे, तभी 10 जनवरी की रात 1 बजे मंझला जेठ कमरे में आ गया और दुष्कर्म किया। मैंने विरोध किया, तो उसने मेरे पास सो रही 10 महीने की बेटी की हत्या की धमकी दी। मंझले जेठ के जाते ही बड़ा जेठ कमरे में आया और दुष्कर्म किया। पीड़िता के मुताबिक कमरे के दरवाजे पर कूलर लगा था, इसलिए दरवाजा बंद नहीं था। इसी का फायदा उठाकर दोनों जेठ कमरे में आए थे।

पति के घर लौटने पर बताया तो उसने पीटा

पीड़िता ने बताया कि फरवरी 2025 में पति जावरा से घर वापस आया तो मैंने उसे सारी बात बताई। पति ने मेरी बात झूठ मानते हुए मारपीट की। उसके बाद 23 फरवरी 2025 के बाद हम जंगीपुर वाले घर से बाजार वाले घर पर रहने लगे। वहां भी जब पति घर पर नहीं होते थे तो जेठ आते और दुष्कर्म करते थे।

मायके में आकर रहने लगी, परिजनों को बताया- ऐसे हालात में पीड़िता अपने मायके आ गई। यहां पति लेने आया तो उसने जाने से मना कर दिया। परिजन ने कारण पूछा तो उसने आपबीती सुनाई। इसके बाद मायके वालों ने समाज व परिवार के लोगों को बैठाकर पंचायत बुलाई, लेकिन पीड़िता के ससुराल पक्ष से कोई नहीं आया। इसके बाद परिवार के साथ ग्वालियर महिला थाने जाकर केस दर्ज कराया।